रुपये 10

सेवा समर्पण

वर्ष-40, अंक-02, कुल पृष्ठ-36, कार्तिक-अग्रहन, विक्रम सम्वत् 2079, नवम्बर, 2022

दीप प्रज्ज्वलित कर सम्मान समारोह का उद्घाटन करते हुए लेफ्टीनेंट जनरल (सेवानिवृत्त) गुरमीत सिंह। साथ में हैं श्री कुलभूषण आहूजा, जनरल वी.के. सिंह, श्री रमेश अग्रवाल और श्री पराग अभ्यंकर

सेवा सम्मान 2022

सत्यमेव जयते

भारत के उपराष्ट्रपति

VICE-PRESIDENT OF INDIA

संदेश

यह हर्ष का विषय है कि सेवा भारती द्वारा समाज के विभिन्न क्षेत्रों की सेवा विभूतियों को सम्मानित किया जा रहा है। यह अभिनंदनीय है। महात्मा गांधी ने कहा था "सभी लोगों का कल्याण ही सच्चा राष्ट्रवाद है"। सेवा भारती, सदियों से समाज के हाशिये पर रहने वाले अभावग्रस्त परिवारों की सार्थक और सराहनीय सेवा करती रही है। संस्था ने "नर सेवा, नारायण सेवा" के अपने मंत्र को जीवन में चरितार्थ किया है।

हमारे संविधान में सभी के लिए राजनैतिक, सामाजिक और आर्थिक न्याय सुनिश्चित करने का लक्ष्य रखा गया है। हाशिये पर रहने वाले लोगों को समाज की मुख्यधारा में बराबर के अवसर दिलाना, उन्हें स्वाभिमान और आत्म विश्वास देना, यही सामाजिक-आर्थिक न्याय है। आज भारत विश्व की पांचवी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है। इस प्रगति में समाज के हर वर्ग की भागीदारी के लिए हाल ही के वर्षों में लिए गये अनेक कदम सार्थक साबित हो रहे हैं।

मुझे विश्वास है कि इन्हीं वंचित परिवारों के पुरुषार्थ और प्रतिभा में देश के तीव्र विकास की अपार संभावनाएं निहित हैं और अनेक अवसर निरन्तरता से उपलब्ध हो रहे हैं। शिक्षा हो या खेलकूद, राष्ट्रीय जीवन के हर क्षेत्र में मौका दिए जाने पर इस समाज के युवाओं की अभूतपूर्व सफलता हमको गौरवान्वित करती है।

लोकतंत्र में महज सरकार का ही नहीं बल्कि समाज का प्रयास भी आवश्यक है। आप जैसी संस्थाएं सरकार और जनता के सम्मिलित प्रयासों की महत्वपूर्ण कड़ी हैं। कोविड के समय प्रवासी मजदूर भाइयों को भोजन तथा सहायता उपलब्ध कराने में अपकी भूमिका सराहनीय रही।

जगदीप धनखड़

जगदीप धनखड़

नई दिल्ली

06 अक्टूबर 2022

परामर्शदाता
आचार्य मायाराम पतंग
डॉ. राम कुमार

●

सम्पादक
श्रीमती इन्दिरा मोहन

सहसम्पादक
शिवाली अग्रवाल

●

कार्यालय
सेवाकुंज, 13, भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001
दूरभाष: 23345014/15
E-mail: info@sewabhartidelhi.org
Website: www.sewabhartidelhi.org

●

पृष्ठ सज्जा
मणिशंकर

●

एक प्रति : 10/-रुपये
वार्षिक शुल्क : 100/-रुपये

सेवा समर्पण

वर्ष-40, अंक-02, कुल पृष्ठ-36, नवम्बर, 2022

विषय - सूची

शीर्षक	लेखक	पृ.
सम्पादकीय		04
सेवा भारती ने समाजसेवियों का किया सम्मान		07
भक्ति आधारित शक्ति के प्रवर्तक	नरेंद्र सहगल	16
श्री राम जानकी विवाह का आध्यात्मिक दर्शन	सुभाष चन्द्र बग्गा	19
बुद्धिमान हंस		22
प्रवचन : क्या है प्रार्थना	स्वामी हरि चैतन्य पुरी	23
एकादशी व्रत के लाभ	बिमल कुमार सिंह	24
स्मार्टफोन एक वरदान या अभिशाप	दीप्ति अग्रवाल	27
मेधावी विद्यार्थी सम्मान समारोह-2022		28
प्रकल्प दर्शन - मातृछाया		29
पूर्वी विभाग में विभिन्न कार्यक्रम	भारती बंसल	30
यमुना विहार विभाग में विभिन्न कार्यक्रम		33
कर्मठ कार्यकर्ता श्री रघुराज सिंह जी	आचार्य मायाराम	34

पाठकों से अनुरोध

सेवा समर्पण के सुधी पाठकों से अनुरोध है कि वे हर अंक में प्रकाशित लेखों और महापुरुषों के विचारों पर अपनी राय अवश्य भेजें।

पता : संपादक, सेवा समर्पण,
13, भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001
दूरभाष: 23345014/15, E-mail: info@sewabhartidelhi.org

सम्पादकीय

तंग कपड़ों से बुर्के तक पहुँचतीं हिंदू लड़कियाँ

भारतीय समाज, विशेषकर हिंदू परिवारों का पश्चिमीकरण बहुत तेजी से हो रहा है। आगे बढ़ने से पहले यह बात स्पष्ट कर लें कि इस लेख का उद्देश्य किसी संस्कृति का विरोध करना नहीं है। इसका उद्देश्य केवल इतना है कि आप किसी भी संस्कृति का अनुसरण करने से पहले उसके पीछे के लाभ और हानि को अवश्य देख लें। किसी समाज की अच्छी चीज को अपनाना कोई बुरी बात नहीं है। समय और परिस्थिति के साथ चलने के लिए अन्य संस्कृतियों की अच्छी बातों को अपनाने से किसी को परेशानी भी नहीं होनी चाहिए। भारत में इसकी पूरी स्वतंत्रता भी है।

इसलिए कुछ भी करने से पहले एक बार अवश्य विचार करें कि आप जो कर रहे हैं, वह समाज के लिए ठीक है या नहीं। जैसे कपड़े को ले सकते हैं। मनुष्य कपड़ा इसलिए पहनता है कि धूप, हवा, सर्दी आदि से उसके शरीर की रक्षा हो सके। लेकिन आजकल महानगरों में जिस तरह के कपड़ों का चलन शुरू हुआ है, वह न तो शरीर को धूप से बचाता है और न ही सर्दी से।

जब अरमान से अनिल बने लड़के को पक्का विश्वास हो जाता है कि अब तो उसके द्वारा फंसाई गई हिंदू लड़की कहीं जा नहीं सकती है, तो उसके साथ वह हैवानियत करने लगता है, जिसे इस्लाम में उचित ठहराया जाता है। बात-बात पर पीटना, गालियाँ देना उसकी दिनचर्या बन जाती है। यही नहीं, बुर्के के बिना उसे घर से बाहर कदम रखने की भी अनुमति नहीं होती है। और जब वह इन चीजों का विरोध करने लगती है, तो उसे जान से मार दिया जाता है और जिसकी जान बच जाती है, उसे तलाक दे दिया जाता है।

महानगरों में रहने वाले अधिकतर लोगों ने अवश्य देखा होगा कि कुछ बच्चियाँ और महिलाएँ इस तरह के कपड़े पहन रही हैं, जिन्हें देखकर अगला व्यक्ति शर्म से गड़ जाता है। ऐसे लोग यह जानते हैं और प्रतिदिन देखते भी हैं कि कुछ बच्चियाँ आधुनिकता के नाम पर ऐसे कपड़े पहन रही हैं, जिससे शरीर का कुछ भाग ही ढका रहता है, बाकी पूरा शरीर खुला रहता है। इनके कपड़े बहुत ही तंग और छोटे होते हैं। इससे न तो धूप से बचाव होता है और न ही सर्दी से। यानी कपड़ा पहनने का उद्देश्य ही गौण हो जाता है। आप अपने घर के अंदर कुछ भी पहनें, कुछ भी खाएं, कुछ भी करें, उससे किसी को कोई लेना-देना नहीं है। लेकिन यदि आप घर से बाहर निकल रहे हैं, तो इतना ध्यान रखना ही होगा कि वैसे ही कपड़े पहनें, जो एक सभ्य व्यक्ति से अपेक्षा की जाती है, लेकिन दुर्भाग्य से ऐसा हो नहीं रहा है। कुछ बच्चियाँ तंग कपड़ों में बाजार जा रही हैं, बसों और मेट्रो में यात्रा कर रही हैं।

इस चलन के पीछे मुख्य रूप से तीन कारण हैं-एक, पश्चिमी संस्कृति, दूसरा, फिल्मों का अंधानुकरण और तीसरा, अपने को 'आधुनिक' मानना।

फिल्मों में नायिकाएँ पैसे के लिए तंग कपड़े पहनती हैं और अश्लील हरकतें करती हैं। उन नायिकाओं की देखादेखी हमारी कुछ बच्चियाँ भी ऐसे ही कपड़े पहनने लगी हैं। ऐसे ही पश्चिमी देशों की महिलाएँ भी तंगहाल कपड़े पहनती हैं। और कुछ लोग तो अपने को 'आधुनिक' इस तरह मानते हैं कि बाकी सब उनके लिए गंवार होते हैं। इनकी नकल भारत की कुछ बच्चियाँ भी कर रही हैं। यह न तो हमारी संस्कृति के अनुरूप है, और न ही मौसम के अनुसार। इसके बाद भी यह हो रहा है।

इस चलन पर रोक लगनी चाहिए। हमें अपनी बच्चियों को बताना होगा, समझाना होगा कि कपड़े ऐसे पहनें, जो कपड़े पहनने के उद्देश्य को पूरा करें। माता-पिता को आगे आना ही होगा। अन्यथा, इस चलन के कारण अनेक समस्याएँ पैदा हो सकती हैं।

इनमें एक बड़ी समस्या है लव जिहाद। आजकल इस तरह के समाचार धड़ल्ले से आ रहे हैं, जिनमें कहा जाता है कि हाथ पर कलावा बांधे और सिर पर तिलक लगाकर मुस्लिम लड़के बालिकाओं के स्कूल, कॉलेज या हिंदू मुहल्लों में घूमते रहते हैं। ये लड़के एक दिन नहीं घूमते हैं। ये किसी एक लड़की को निशाने पर रखकर उसके पीछे महीनों और यहाँ तक कि वर्षों तक चक्कर लगाते हैं। इसके लिए उन्हें कुछ मुस्लिम संगठन पैसा और अन्य संसाधन उपलब्ध कराते हैं। ये संगठन मुस्लिम लड़कों को गाड़ी, कपड़े और अन्य तरह की मदद करते हैं, ताकि ये हिंदू लड़कियों को प्रेमजाल में फांस सकें। यह काम बहुत तेजी से हो रहा है। इस कारण इन दिनों पूरे देश में लव जिहाद की घटनाएँ बढ़ी हैं। हिंदुओं की लड़कियों को मुसलमान बनाना, यह इस्लामी जिहाद का ही हिस्सा है। लेकिन आधुनिकता की अंधेरी गली में जीने वाला अधिकांश हिंदू समाज लव जिहाद को पहचान नहीं पा रहा है।

हिंदू माता-पिता अपने को प्रगतिशील और आधुनिक मानकर अपनी बच्चियों को हर तरह की छूट दे रहे हैं। बच्चों को पढ़ाई-लिखाई और अन्य कार्यों में छूट मिलनी ही चाहिए, ताकि उनका उचित विकास हो, वे अपने पैरों पर खड़ी हो सकें। लेकिन इसके साथ ही माता-पिता को यह भी ध्यान रखना होगा कि कहीं उसकी बच्ची छूट का दुरुपयोग कर 'मन की मालकिन' तो नहीं बन रही है। जो बच्ची 'मन की मालकिन' बन जाती है उस पर माता-पिता का कोई नियंत्रण नहीं रह पाता है। 'मन की मालकिन' बनने के कारण इन बच्चियों को यह नहीं पता होता है कि घर से बाहर जाने पर किससे मिलना चाहिए और किससे नहीं मिलना चाहिए। ऐसी बच्चियों को यह भी नहीं पता होता है कि उसके साथ कौन छल कर रहा है और कौन उसका हितैषी है। इस कारण हमारी कुछ बच्चियाँ लव जिहादियों के असली स्वरूप को नहीं पकड़ पाती हैं। और ये छलिए ऐसे होते हैं कि कोई अरमान अपना नाम अनिल या कोई शाहिद अपना नाम सुरेश रख लेता है और इसी अनिल या सुरेश के नाम से वह किसी हिंदू लड़की से दोस्ती करता है। उसे विश्वास दिलाने के लिए तिलक भी लगा लेता है, और कभी खुद ही मंदिर जाने के लिए भी कहता है। चूँकि बच्ची 'मन की मालकिन' बन जाती है इसलिए वह बाहर की गतिविधियों की जानकारी अपने घर वालों को देना उचित नहीं मानती है और इस तरह वह एक दिन किसी नकली अनिल या सुरेश के चक्कर में फंस जाती है। और जब तक इसकी जानकारी घर वालों को होती है, तब तक वह नकली अनिल या सुरेश उसके साथ ऐसा व्यवहार कर चुका होता है कि सब कुछ जानकर भी लोक-लाज से बचने के लिए उसके साथ रहने लगती है।

और जब उस नकली अनिल या सुरेश को पक्का विश्वास हो जाता है कि अब तो वह कहीं जा नहीं सकती है, तो उसके साथ वह हैवानियत करने लगता है, जिसे इस्लाम में उचित ठहराया जाता है। बात-बात पर पीटना, गालियाँ देना उसकी दिनचर्या बन जाती है।

यही नहीं, बुर्के के बिना उसे घर से बाहर कदम रखने की भी अनुमति नहीं होती है। और जब वह इन चीजों का विरोध करने लगती है, तो उसे जान से मार दिया जाता है और जिसकी जान बच जाती है, उसे तलाक दे दिया जाता है।

इसके बाद उस बेचारी की जिंदगी किसी नरक से भी बुरी हो जाती है। आज समाज में ऐसी बेचारियों की संख्या लाखों में है। इसके लिए वे स्वयं जितनी दोषी हैं, उतना ही दोषी उनके माता-पिता या घर के अन्य लोग भी हैं। दोषी इसलिए हैं कि आपने बचपन से उसे यह नहीं बताया कि तुम्हारे लिए क्या ठीक है और क्या ठीक नहीं है। यह भी नहीं बताया कि किसी भी अंजान से दोस्ती मत करना, उसकी किसी बात पर विश्वास न करना। इसका लाभ लव जिहादी उठा रहे हैं और एक षड्यंत्र के अंतर्गत जिहाद कर रहे हैं।

इसलिए हर हिंदू माता-पिता को बचपन से अपनी बच्चियों को सतर्क और सजग करना होगा। अन्यथा, वही होगा, जो लव जिहादी कर रहे हैं।

पाथेय

अन्तकाले च मामेव स्मरन्मुक्त्वा कलेवरम्।
यो प्रयाति से मयावं यातिनास्तिअत्र संशय॥

सरलार्थ : भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा कि जो व्यक्ति अन्त समय में मुझको ही याद करते हुए शरीर छोड़ता है, वह मेरे स्वरूप को ही प्राप्त कर लेता है। इसमें तनिक भी संदेह नहीं है।

श्रीमदभगवत् अ. 8/4

शाश्वत धर्म

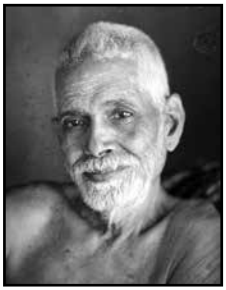

सच्चा गुरू सुख दुख व लाभ हानि को एक समान समझता है। राग द्वेष त्याग कर निष्कामभाव से कार्य करता है। वह सबको सुख देने वाला तथा सबसे समान व्यवहार करने वाला होता है। सच्चा गुरू निष्पक्ष, निर्मल, सरलचित्त तथा क्षमा शील होता है। उसे रूप रंग से नहीं, बल्कि स्वभाव से ही पहचाना जाता है।

- रमण महर्षि

नवम्बर 2022 माह के स्मरणीय दिवस

दिनांक	वार	महत्व
1.11.22	मंगलवार	गोपाष्टमी पर्व
2.11.22	बुधवार	अक्षय नवमी उत्सव
4.11.22	शुक्रवार	देव उठनी एकादशी तथा संत नामदेव जयन्ती
5.11.22	शनिवार	कविवर कालीदास जयन्ती
6.11.22	रविवार	बैकुंठ चतुर्दशी पर्व
8.11.22	मंगलवार	चन्द्र ग्रहण, गंगा स्नान, निम्बार्क जयंती तथा गुरू नानक जयन्ती
14.11.22	सोमवार	बाल दिवस, नेहरू जयन्ती
16.11.22	बुधवार	काल भैरव अष्टमी
17.11.22	गुरूवार	लाला लाजपत राय निधन
19.11.22	शनिवार	इन्दिरा गांधी जयंती
23.11.22	बुधवार	अमावस्या
24.11.22	गुरूवार	गुरू तेगबहादुर निधन
28.11.22	सोमवार	श्रीराम सीता विवाह एवं बांके बिहारी जी प्राकट्य
30.11.22	बुधवार	नरसी मेहता जयन्ती

सेवा भारती ने समाजसेवियों का किया सम्मान

अपने जीवनभर की कमाई को निस्वार्थ भाव से समाज की सेवा के लिए अर्पित करने वाले दानवीरों को सम्मानित करने के लिए नई दिल्ली स्थित डॉ. आंबेडकर इंटरनेशनल सेंटर में एक कार्यक्रम का आयोजन हुआ। इसमें समाज में उल्लेखनीय कार्य हेतु रतन टाटा एवं चलासनी बाबू राजेंद्र प्रसाद को संयुक्त रूप से 'सेवा रत्न' से सम्मानित किया गया। यह सम्मान उत्तराखंड के राज्यपाल ले. जन. (से.नि.) गुरमीत सिंह द्वारा दिया गया। समारोह की अध्यक्षता सहारनपुर के संत प्रद्युम्न ने की। इस अवसर पर केंद्रीय मंत्री जनरल (से.नि.) वी.के. सिंह, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय सेवा प्रमुख श्री पराग अभ्यंकर, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, दिल्ली के संघचालक श्री कुलभूषण आहूजा और सेवा भारती दिल्ली के अध्यक्ष श्री रमेश अग्रवाल भी मंच पर विराजमान थे।

रतन टाटा और चलसानी बाबू राजेंद्र प्रसाद के अलावा अमूल के मुख्य कार्यकारी अधिकारी आर. एस.सोढ़ी, समाजसेवी मधुसूदन अग्रवाल, कृष्ण कुमार अग्रवाल, राजेन्द्र सिंहल, सीबीआर प्रसाद, समता फाउंडेशन (मुंबई), अजंता फार्मा, श्याम सुंदर अग्रवाल (मिल्क फूड्स), यामिनी जयपुरिया (कॉस्मो ग्रुप), अशोक अग्रवाल (ग्लोब कैपिटल), रोशनी नादर, रघुपति सिंघानिया (जेके ग्रुप)आदि को भी सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर ले. जन. (से.नि.) गुरमीत सिंह ने कहा कि सेवा कार्य मानवता के लिए सबसे बड़ा कार्य है। जिन्हें सेवा करने का अवसर मिलता है, मानो उन पर भगवान की बड़ी कृपा है। उन्होंने यह भी कहा कि आज जो लोग सम्मानित हुए हैं, वे प्रभु के रूप हैं। उन्होंने यह भी कहा कि संत, सेवक, सैनिक और सिख सब एक हैं।

श्री पराग अभ्यंकर ने कहा कि भारतीयता हमें सेवा और संस्कार की प्रेरणा देती है। सेवा करने से समाज में बदलाव आता है। सेवा मानव के जीवन का निर्माण करती है और अहंकार को तोड़ती है। उन्होंने यह भी कहा कि संघ के स्वयंसेवकों द्वारा चलाए जा रहे सेवा कार्यों ने सकारात्मक बदलाव लाया और एक नई राह दिखाई है। जनरल वी. के. सिंह ने कहा कि सनातन संस्कृति सेवा के लिए प्रेरित करती है। उन्होंने सेवा भारती की तारीफ करते हुए कहा कि सेवा भारती के कार्य अतुलनीय हैं।

संत प्रद्युम्न ने कहा कि जाति-पाति से ऊपर उठकर सेवा कार्य करने से ही भारत सही मायने में भारत बन सकता है। उन्होंने जातिवाद को एक रोग बताते हुए कहा कि इसका निदान होना ही चाहिए। रमेश अग्रवाल ने कहा कि भारत की धरा में महर्षि दधीचि, राजा बलि, दानवीर कर्ण व भामाशाह समेत अनेक कोपलें फूटीं, जिन्होंने राष्ट्र सेवा के लिए सर्वस्व न्योछावर कर दिया। भारतवर्ष में आज भी उस परंपरा का अनुसरण हो रहा है, जिसके आधार पर लाखों वंचितों व उपेक्षितों तक विभिन्न माध्यमों से सहायता और सहयोग पहुंच रहा है। कार्यक्रम में सेवा भारती के विभिन्न प्रकल्पों से लाभान्वित लोगों ने अपने अनुभव सुनाए और सेवा भारती के प्रति आभार व्यक्त किया।

सेवा कार्य मानवता के लिए सबसे बड़ा कार्य है। जिन्हें सेवा करने का अवसर मिलता है, मानो उन पर भगवान की बड़ी कृपा है।

– ले. जन. (से.नि.) गुरमीत सिंह

राज्यपाल, उत्तराखंड

सेवा सम्मान–2022

- **समता फाउंडेशन : सेवाभूषण**

अपने सेवाकार्यों के लिए वैश्विक पटल पर पहचान बनाने वाली समता फाउंडेशन को नेतृत्व मिला श्री पुरूषोत्तम अग्रवाल एवं श्री मधुसूदन अग्रवाल जैसे समाजसेवियों का। मोतियाबिंद के सफल इलाज के लिए विभिन्न स्थानों पर मुफ्त उपचार करके हजारों लोगों की आंखो को रोशनी देने का ईश्वरीय कार्य किया। इसके लिए समता फाउंडेशन को सेवा भूषण से सम्मानित किया गया।

- **अमूल (जी.सी.एम.एम.एफ.) : सेवाभूषण**

दुग्ध क्रांति के क्षेत्र में अमूल ने दुनियाभर के सामने एक मिसाल प्रस्तुत की। लाखों किसानों को अमूल का स्टेकहोल्डर बनाकर, स्वावलंबी बनाने का कार्य किया। शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में भी अमूल ने अभूतपूर्व कार्य किए।

देश में श्वेत क्रांति लाने के लिए अमूल को सेवा भूषण से सम्मानित किया जाता है। यह सम्मान अमूल के मुख्य कार्यकारी अधिकारी डॉ. आर.एस. सोढ़ी ने प्राप्त किया।

- **श्री कृष्ण कुमार अग्रवाल : सेवाभूषण**

श्री कृष्ण कुमार अग्रवाल, जिन्होंने सेवाकार्यों के क्षेत्र में अपने समर्पण भाव से सैकड़ों युवाओं को स्वावलंबी बनाया एवं शिक्षा के क्षेत्र में अविस्मणीय योगदान दिए। अग्रोहा में उनके द्वारा बनाए गए मेडिकल कॉलेज से अब तक लाखों लोगों को स्वास्थ्य लाभ मिल चुका है। इस कार्य के लिए श्री कृष्ण कुमार अग्रवाल को सेवा भूषण से सम्मानित किया गया।

- **श्री अशोक अग्रवाल : सेवाभूषण**

ग्लोब कैपिटल फाउंडेशन के ट्रस्टी और अनेकों अवार्डो से अलंकृत श्री अशोक अग्रवाल एक सफल व्यवसायी के साथ समाजसेवी हैं। जिन्होंने शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वालंबन के क्षेत्र में अतुलनीय कार्य किए हैं। कोरोना काल में इनके सेवाकार्यों से सैकड़ों जरूरतमंदों को लाभ मिला।

श्री अशोक अग्रवाल को उनके अतुलनीय सेवाकार्यो के लिए सेवाभूषण से सम्मानित किया गया।

- **श्री राजेंद्र सिंघल : सेवाभूषण**

श्री राजेंद्र सिंघल जी ने लाला दीपचंद मेमोरियल अस्पताल एवं अनेकों सामाजिक संगठनों को आपने भूमि दान करके उनके कार्यो की नींव डालने में मदद की।

श्री राजेंद्र सिंघल जी को उनके सेवाकार्यों के लिए सेवा भूषण से सम्मानित किया गया।

- **निगमबोध घाट, बड़ी पंचायत वैश्य बीसे अग्रवाल : सेवाभूषण**

निगमबोध घाट, बड़ी पंचायत वैश्य बीसे अग्रवाल को उनके सेवाकार्यों के लिए सेवा भूषण से सम्मानित

किया गया। यह सम्मान संस्था के मुख्य प्रबंधक श्री सुमन गुप्ता जी एवं प्रबंधक श्री नितिन गुप्ता जी ने ग्रहण किया।

- **स्व. श्री हरी कृष्ण राठी जी (मरणोपरांत): सेवाभूषण**

स्व. श्री हरीकृष्ण राठी जी के समाज कार्यों से सैकड़ों युवाओं को प्रेरणा मिलती है।

सेवाधाम और अन्य सेवा प्रकल्पों के निर्माण में कभी भी लोहे की जरूरत होने पर उन्होंने बिना विलंब के उसे पूरा किया।

स्व. श्री हरीकृष्ण राठी जी को उनके अभूतपूर्व सेवाकार्यों के लिए मरणोपरांत सेवा भूषण से सम्मानित किया गया। यह सम्मान उनके प्रपौत्र श्री धनंजय राठी ने प्राप्त किया।

- **भिवानी परिवार मैत्री संघ : सेवाभूषण**

हरियाणा के भिवानी से जुड़े परिवारों के इस संगठन, भिवानी परिवार मैत्री संघ को उनके सेवाकार्यों के लिए सेवा भूषण से सम्मानित किया गया। संस्था के प्रधान श्री राजेश चेतन और महामंत्री श्री दिनेश गुप्ता ने इस सम्मान को ग्रहण किया।

- **श्री सुनील कुमार जैन : सेवाभूषण**

श्रीमान सुनील जी जीतो और अनुव्रत न्यास के संरक्षक ट्रस्टी है। आपने शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में अभूतपूर्व कार्य किए। अभूतपूर्व सेवाकार्यों के लिए श्री सुनील कुमार जैन जी को सेवाभूषण से सम्मानित किया गया।

सेवा करने से समाज में बदलाव आता है। सेवा मानव के जीवन का निर्माण करती है और अहंकार को तोड़ती है।

– पराग अभ्यंकर

अ.भा. सेवा प्रमुख, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

- **श्रीमती यामिनी कुमार जयपुरिया : सेवाभूषण**

श्रीमती जयपुरिया अपनी संस्था कॉस्मो फाउंडेशन के माध्यम से शिक्षा, कौशल विकास, स्वास्थ्य एवं पर्यावरण के क्षेत्र में अभूतपूर्व काम कर रही हैं। श्रीमती यामिनी कुमार जयपुरिया जी को उनके अविस्मरणीय सेवाकार्यों के लिए सेवा भूषण से सम्मानित किया गया।

- **स्वर्गीय श्री जसवंत अरोड़ा (मरणोपरांत): सेवाभूषण**

स्व. अरोड़ा जी ने जमीन का एक बहुत बड़ा हिस्सा देकर सेवाधाम जैसा विद्यालय बनाने में मदद की। अपने जीवनकाल में भूखों को भोजन, पौधे लगाने की मुहीम और स्वावलंबन के प्रयासों से सदैव जुड़े रहे।

स्व. श्री जसवंत अरोड़ा जी को मरणोपरांत उनके सेवाकार्यों के लिए सेवा भूषण से सम्मानित किया गया। यह सम्मान उनकी पत्नी श्रीमती गीता अरोड़ा जी ने प्राप्त किया।

- **श्री नन्दकिशोर अग्रवाल : सेवा भूषण**

आपने कृषि क्षेत्र, गौ-संरक्षण, महिला सशक्तिकरण, स्वास्थ्य एवं शिक्षा के क्षेत्र में अतुलनीय प्रयास किए और आज भी कर रहे हैं।

श्री नंद किशोर अग्रवाल जी को उनके सामाजिक कार्यों के लिए सेवा भूषण से सम्मानित किया गया।

- **डॉ. जी. अनुह्या रेड्डी : सेवाभूषण**

विमेन एचीवर अवार्ड से सम्मानित श्रीमती रेड्डी ने कोरोना काल में भी बहुत से जरूरतमंदों को मदद की। महिला सशक्तिकरण के लिए किया गया आपका काम, एक मिसाल बन गया।

डॉ जी. अनुह्या रेड्डी जी को उनके सेवाकार्यों के लिए सेवाभूषण से सम्मानित किया गया।

- **श्री सुनील कुमार गुप्ता : सेवाभूषण**

बैंकिग सेक्टर से रिटायर होने के बाद अपनी पेंशन का 50 प्रतिशत हिस्सा समाज कार्य में समर्पित करने वाले श्री सुनील कुमार गुप्ता, समाजसेवा के क्षेत्र में सैकड़ों के लिए प्रेरणा बने।

श्री सुनील कुमार गुप्ता जी को उनके सेवाकार्यों के लिए सेवा भूषण से सम्मानित किया गया।

- **डॉ. रघुपति सिंघानिया : सेवाभूषण**

अपनी उद्योग संस्था के माध्यम से जहां विश्वभर के ऑटो सेक्टर में आप भारत का नाम रोशन कर रहे हैं वहीं सेवाकार्यों में भी आपकी संस्था सदैव अग्रणी रहती है।

मेक इन इंडिया की भावना को पूरे विश्व में स्थापित करने वाले, जेण्केण टायर एंड इंडस्ट्रीज के चेयरमेन और मैनेजिंग डायरेक्टर डॉ रघुपति सिंघानिया को उनके अभूतपूर्व सेवाकार्यों के लिए सेवा भूषण से सम्मानित किया गया। यह सम्मान जेके टायर के प्रबंध निदेशक डॉ. ए.के. बजोरिया ने ग्रहण किया।

- **श्री नरेश मित्तल : सेवाभूषण**

आपने गौ-सेवा, पर्यावरण संरक्षण, स्वास्थ्य एवं शिक्षा के क्षेत्र में बेमिसाल काम किए हैं। आपके सेवाकार्यों के लिए आपको सेवा भूषण से सम्मानित किया गया।

- **स्लीपवेल फाउंडेशन : सेवाभूषण**

मानसिक स्वास्थ्य का विषय कोरोना काल के बाद बहुत महत्वपूर्ण होता चला गया और श्रीमती नमिता गौतम के नेतृत्व में, फाउंडेशन ने इस दिशा में जनजागरूकता और एडवोकेसी के माध्यम से सरकार एवं समुदाय दोनों को जागरूक किया।

स्लीपवेल फाउंडेशन के सेवाकार्यों के लिए उन्हें सेवा भूषण से सम्मानित किया गया। यह संस्था की प्रबंध न्यासी श्रीमती नमिता गौतम ने ग्रहण किया।

- **श्री सुभाष चंद अग्रवाल : सेवाभूषण**

स्वास्थ्य एवं शिक्षा के क्षेत्र में अपना तन-मन-धन समर्पित करने वालेश्री सुभाष चंद अग्रवाल ने एक सफल व्यवसायी के साथ समाजसेवी के रूप में पूरे भारतवर्ष में पहचान बनाई।

जाति-पाति से ऊपर उठकर सेवा कार्य करने से ही भारत सही मायने में भारत बन सकता है।

– **संत प्रद्युम्न,** सहारनपुर

श्री सुभाष चंद अग्रवाल को उनके बेमिसाल सेवाकार्यों के लिए सेवाभूषण से विभूषित किया गया।

- **देहदानी श्री मांगेराम गर्ग जी (मरणोपरांत): सेवाभूषण**

देहदानी स्व. श्री मांगेराम गर्ग जी का प्रेरणादायी व्यक्तित्व सैकड़ों कार्यकर्ताओं के लिए सेवाकार्यों को सीखने की पाठशाला है। मृत्यु के उपरांत अपनी देह को दान कर उन्होंने अपने समर्पण भाव को सदैव के लिए जीवित कर दिया।

स्व. श्री मांगेराम गर्ग जी को मरणोपरांत उनके सेवाकार्यों के लिए सेवा भूषण से सम्मानित किया गया।

यह सम्मान देहदानी मांगेराम गर्ग जी के सुपुत्र श्री अशोक गर्ग ने ग्रहण किया।

- **डॉ. रमेश गुप्ता : सेवाभूषण**

अमेरिका में रहकर भी भारतीय संस्कृति और समाज के प्रति समर्पण भाव रखने वाले, समाजसेवी डॉ रमेश गुप्ता को अभावग्रस्तों और जरूरतमंदों का सच्चा हितैषी कहा जाता है।

एकल विद्यालय प्रकल्पों में आपका सहयोग शिक्षा के क्षेत्र में नए उदाहरण प्रस्तुत कर रहा है। ये कहा जाता है रमेश जी के दरवाज़े जो गया, वो कभी खाली हाथ नही लौटा। ऐसे डॉ रमेश गुप्ता को उनके सेवाकार्यों के लिए सेवाभूषण से सम्मानित किया गया।

- **स्व. श्री घनश्याम दास बंसल : सेवाभूषण**

अशोक विहार स्थित वडेरा भवन में पैथलैब बनाने के लिए आपने बड़ा दान दिया। सामाजिक न्याय और समानता के साथ घनश्याम दास जी ने अपना पूरा जीवन परोपकार के साथ जीया।

श्री घनश्याम दास जी बसंल को मरणोपरांत सेवा भूषण से सम्मानित किया गया। यह सम्मान उनके पुत्र श्री प्रेम बंसल ने ग्रहण किया।

- **पी.जी.डी.ए.वी. कॉलेज (सांध्य) : सेवाभूषण**

संपूर्ण शिक्षा समाजसेवा के बिना अधूरी है, इस मूलमंत्र के साथ कार्य करने वाले डॉ. रविंद्र गुप्ता वर्तमान में भी अनेक सेवा प्रकल्पों को पी.जी.डी.ए.वी. सांध्य कॉलेज में सफलता पूर्वक चला रहे हैं।

उनके अतुलनीय प्रयासों से पी.जी.डी.ए.वी. कॉलेज (सांध्य) को सेवा भूषण से सम्मानित किया गया।

- **श्रीमती ललिता निझावन : सेवाभूषण**

अपने पिता के दिखाए रास्तों पर चलते हुए श्रीमती ललिता निझावन, अपने युवाकाल से ही सामाजिक गतिविधियों में सक्रियता से समर्पित रहीं। आपने महिलाओं

की शिक्षा और स्वावलंबन के क्षेत्र में अकल्पनीय कार्य किया है।

श्रीमती ललिता निझावन को उनके अभूतपूर्व सेवाकार्यों के लिए सेवा भूषण से सम्मानित किया गया।

- **श्री श्याम सुंदर अग्रवाल : सेवाभूषण**

मां आदिलक्ष्मी के कृपापात्र, सेवाकार्यों के प्रति सदैव समर्पित, शिक्षा के क्षेत्र में अविस्मणीय योगदान देने वाले, भूखों को भोजन के लिए जिनके भंडार सदैव खुले हों, ऐसे श्री श्याम सुंदर अग्रवाल जी को उनके सेवाकार्यों के लिए सेवा भूषण से सम्मानित किया गया।

- **श्री सुंदर लाल गोयल : सेवाभूषण**

अनेकों सेवा प्रकल्पों में नियमित दानवीर, गौ-सेवक, शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में अकल्पनीय योगदान देने वाले, श्री गोयल स्वावलंबन के प्रयासों में भी अपनी महत्ती भूमिका निभा रहे हैं।

श्री सुंदर लाल गोयल को उनके उल्लेखनीय सेवाकार्यों के लिए सेवा भूषण से सम्मानित किया गया।

- **श्री वीरेन्द्र माटा : सेवाभूषण**

श्री वीरेंद्र माटा जी, अपनी माता जी से सत्य और सेवा का पाठ पढ़ने के साथ ही बड़े हुए और सेवाकार्यों में खुद को समर्पित कर दिया। आप जीवनबाई केंद्र के प्रमुख के तौर पर सेवाकार्यों को पूर्ण कर रहे हैं। अद्‌भुत सेवाकार्यों के लिए श्री वीरेंद्र माटा जी को सेवाभूषण से सम्मानित किया गया।

- **भगवान महावीर रिलीफ फाउंडेशन ट्रस्ट : सेवाभूषण**

भगवान महावीर रिलीफ फाउंडेशन ट्रस्ट, स्वास्थ्य के क्षेत्र में एक ऐसा नाम जो स्वास्थ्य सेवाओं को अभावग्रस्त, गरीब लोगों तक सुलभता से पहुंचाने के लिए पिछले 5 साल से लगातार काम कर रहा है। स्वास्थ्य के क्षेत्र में उनके अविस्मरणीय योगदान के लिए उन्हें सेवा भूषण से सम्मानित किया गया। यह सम्मान संस्था के निदेशक श्री प्रसन्न जैन जी ने ग्रहण किया।

- **श्री के.जी. सोमानी : सेवाभूषण**

आपने स्वास्थ्य के क्षेत्र में अतुलनीय योगदान दिया और तिलक नगर में स्थित डायलेसिस केंद्र की स्थापना में तन-मन-धन से योगदान दिया। श्री के.जी. सोमानी जी को उनके सेवाकार्यों के लिए सेवा भूषण से सम्मानित किया गया।

- **स्वर्गीय श्री देशराम यादव (मरणोपरांत) : सेवाभूषण**

सेवाभारती को उसकी स्थापना के लिए भवन निर्माण की भूमि देने का पुण्य कार्य स्व॰ श्री देशराम

सनातन संस्कृति सेवा के लिए प्रेरित करती है। सेवा भारती के कार्य अतुलनीय हैं।
– जनरल वी.के. सिंह, केन्द्रीय मंत्री

यादव जी ने किया।

स्व. श्री देशराम यादव जी को मरणोपरांत उनके सेवाकार्यों के लिए सेवा भूषण से सम्मानित किया गया।

यह सम्मान उनके पुत्र श्री कैलाश यादव ने प्राप्त किया।

- **श्री मुकेश अग्रवाल : सेवाभूषण**

स्वास्थ्य और शिक्षा के क्षेत्र से जुड़े सेवाकार्यों में विशेष रूचि के साथ सदैव अग्रिम पंक्ति में खड़े समाजसेवी श्री मुकेश अग्रवाल, विद्यालय को गोद लेकर जरूरतमंदों की शिक्षा को सुनिश्चित कर रहे हैं।

श्री मुकेश अग्रवाल को उनके सेवाकार्यों के लिए सेवा भूषण से सम्मानित किया गया।

- **श्री राजीव गुप्ता : सेवाभूषण**

श्री गुप्ता नेत्रहीनों के लिए सेवाकार्य करने के लिए सदैव तत्पर रहते हैं और साथ ही अनेकों लोगों को समाजसेवा के प्रयासों से जोड़ा।

श्री राजीव गुप्ता जी को उनके सेवाकार्यों के लिए सेवाभूषण से सम्मानित किया गया।

- **श्री ओमप्रकाश बागला : सेवाभूषण**

रामकृष्ण सेवा संस्थान के चेयरमेन श्री बागला, स्वास्थ्य के क्षेत्र में अभूतपूर्व भूमिका निभा रहे हैं।

श्री ओमप्रकाश बागला को उनके सेवाकार्यों के लिए सेवाभूषण से सम्मानित किया गया।

- **श्री चलासानी बाबू राजेंद्र प्रसाद : सेवारत्न**
  - श्रीमान चलासानी बाबू राजेंद्र प्रसाद जी ने 108 महीने डिफेंस में सेवा देने के बाद, 108 को अपना लक्की नंबर माना, जो कि हमारी संस्कृति में 108 मन कों सेजुड़ा हुआ है।
  - 2019 में आपने 108 लाख रूपये डिफेंस फंड के लिए रक्षा मंत्री जी को दान दिए।
  - साल 2020 में 108 लाख रुपये सेवाभारती, विजयवाडा को कोरोना प्रयासों के लिए दान दिए।
  - साल 2019 में आपने 108X3 लाख रूपये विद्या भारती, विजयवाड़ा को सैनिक आवासीय विद्यालय बनाने के लिए दान दिए।
  - साल 2022 में आपने विद्या भारती को 108 कमरों का विद्यालय दान दिया।
  - अपने माता-पिता की याद में 108 लाख की बिल्डिंग श्रीकृष्णा जिले में स्कूल के लिए दान की।

आपके सेवाकार्य निरंतर समाज के उत्थान के लिए जारी हैं।

श्री चलासानी बाबू राजेंद्र प्रसाद जी को सेवा रत्न से सम्मानित किया गया। ❒

भारत की धरा में महर्षि दधीचि, राजा बलि, दानवीर कर्ण व भामाशाह समेत अनेक कोपलें फूटीं, जिन्होंने राष्ट्र सेवा के लिए सर्वस्व न्योछावर कर दिया।

– रमेश अग्रवाल

अध्यक्ष, सेवा भारती, दिल्ली

भक्ति आधारित शक्ति के प्रवर्तक

■ **नरेंद्र सहगल**

भारतीय इतिहास इस सच्चाई का साक्षी है कि जब भी विदेशी आक्रान्ताओं द्वारा भारत पर आक्रमण करके हमारे सनातन जीवन मूल्यों को समाप्त करने का प्रयास किया गया, हमारे आध्यात्मिक महापुरुषों ने विधर्मी हमलावरों के अत्याचारों का सामना किया और समाज को जगाकर उसमें एकात्मता स्थापित करने के अपने राष्ट्रीय कर्तव्य की पूर्ति की। श्रीगुरु नानकदेव से दशमेश पिता श्रीगुरु गोविंदसिंह तक 10 गुरुओं की परंपरा भारत के इसी वीरव्रति इतिहास का एक स्वर्णिम अध्याय है।

मुसलमानों की राजसत्ता के कालखंड में भी महान संत एवं संन्यासी उत्पन्न हुए। चैतन्य, तुलसीदास, सूरदास, ज्ञानेश्वर, रामानंद, तुका राम, रामानुज, नानक तथा इसी प्रकार के अनेक संत हुए, जिन्होंने देश को धार्मिक परंपराओं के साथ संगठित किया। लोगों में अपने देवी-देवताओं के प्रति श्रद्धा एवं आस्था का जागरण हुआ। फलस्वरूप समाज ने अपने को छत्रपति शिवाजी के रूप में प्रकट किया। इस सांस्कृतिक जागरण का ही परिणाम था नवीन क्षात्रधर्म।

इसी तरह जब उत्तर भारत में विदेशी शासकों के जुल्मों के नीचे समाज रौंदा जा रहा था। पंजाब आक्रान्ताओं से बार-बार पददलित हो रहा था। प्रत्येक आक्रमण के समय पंजाब बुरी तरह से झुलस जाता था। परंतु पंजाब में फिर एक बार संत शक्ति ने अपने आपको श्रीगुरु नानकदेव के रूप में प्रकट कर दिया। भाई गुरदास भल्ला के अनुसार, "सतगुरु नानक प्रगटया-मिटी धुंध जग चानण होआ।" हमारे भारत की परंपरा रही है कि पहले संत-महात्माओं अर्थात राजनीति से अक्षिप्त सामाजिक शक्ति के द्वारा सामाजिक संगठन का कार्य और फिर इस संगठित शक्ति के द्वारा छात्रधर्म का जागरण ।। आधुनिक इतिहासकार भाई धर्मवीर अपनी पुस्तक 'पंजाब का इतिहास' में लिखते हैं, "पंजाब में हिन्दू चिरकालिक मुस्लिम शासन के कारण ऐसे दब गए थे कि प्रतिरोध शक्ति उनसे निकल गई थी। विदेशी अत्याचार एवं जबर के कारण पंजाब में मेहनत मजदूरी करने वाले गरीब लोग मुसलमान बन चुके थे। हिंदुओं के मंदिर तोड़ दिए गए थे। पाठशालाओं और विद्यापीठों के स्थान में मस्जिद और मकबरे बना दिए गए थे। हिंदू जनसाधारण में धर्म का प्रायः लोप हो चुका था। धर्म का स्थान मिथ्याचार ने ले लिया था।''

इन दिनों पंजाब में अज्ञानता और अंधकार का बोलबाला था। इस माहौल का परिणाम यह हुआ कि हिंदू समाज में जाति-बिरादरी ने और भी ज्यादा खतरनाक रूप ले लिया। इस वातावरण में श्रीगुरु नानकदेव ने हिंदुओं को आडंबर एवं मिथ्याचार से निकालकर परमेश्वर की भक्ति और शक्ति की आराधना की ओर ले जाने का अभियान छेड़ दिया। श्रीगुरु नानकदेव ने इस बात की आवश्यकता अनुभव की कि राजनीतिक अत्याचारों के विरुद्ध आवाज उठाई जाए।

अत: इसी उद्देश्य के लिए श्रीगुरु नानकदेव जी ने भक्ति आंदोलन को प्रारंभ किया। इस महापुरुष तथा इनके द्वारा प्रस्थापित मार्ग के अनुयायियों के बलिदानों के परिणामस्वरूप हमारे समाज के क्षात्रधर्म ने अपने को श्रीगुरु गोविंदसिंह जी के रूप में प्रकट कर दिया। इनके द्वारा की गई खालसा पंथ की सिरजना क्षात्रधर्म का एक सशक्त विधिवत स्वरूप थी। इस प्रकार एक बार पुनः धर्म को केंद्र मानकर राष्ट्रीय एकीकरण का महान कार्य संपन्न हुआ।

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम जी से लेकर श्रीगुरु गोविंदसिंह जी तक हमारे राष्ट्र का इतिहास इस सत्य को स्पष्ट करता है कि भक्ति आंदोलन के माध्यम से क्षात्र शक्ति का उदय, यह भारत एवं भारतीयता को जिंदा रखने की परंपरा सदैव रही है।

खालसा पंथ का शिलान्यास

"किरत करो, वंड छको ते नाम जपो" अर्थात् परिश्रम (कर्म) करते हुए बांटकर खाओ और परमपिता परमात्मा का स्मरण करो। हमारे सिख समाज के इस सिद्धांत अथवा विचारधारा के प्रवर्तक श्रीगुरु नानक देव जी महाराज ने जहां एक ओर सामाजिक समरसता, सामाजिक सौहार्द और सृष्टिनियंता अकालपुरख के चिंतन/मनन को अपने कर्मक्षेत्र का आधार बनाया, वहीं उनके जेहन में विधर्मी/विदेशी हमलावरों द्वारा भारतीय समाज (विशेषतया हिन्दू समाज) पर किए जा रहे भीषण अत्याचारों के प्रतिकार की योजना भी साकार रूप ले रही थी।

भारत की धरती पर उपजे सांस्कृतिक एवं कर्म-चिंतन 'धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष' के ध्वजवाहक श्रीगुरु नानकदेव द्वारा स्थापित दस गुरुओं की वीरव्रति परंपरा ही भारत/धर्मरक्षक खालसा पंथ की प्रेरणा एवं आधार अथवा शिलान्यास थी। दसों सिख गुरुओं के त्याग, तपस्या और अतुलनीय बलिदानों का प्रकट स्वरूप है 'खालसा'। इसीलिए सभी गुरुओं को प्रथम नानक, द्वितीय नानक, तृतीय नानक, चतुर्थ नानक, पंचम नानक, छठे नानक, सप्तम नानक, अष्टम नानक, नवम नानक और दशम नानक (दशमेश पिता) कह कर सम्मान दिया जाता है।

श्रीगुरु नानकदेव जी का कर्म-क्षेत्र किसी एक बंद कमरे, गुरुकुल अथवा आश्रम तक सीमित नहीं था। इस देव-पुरुष (अवतारी) ने परिवारों, आश्रमों तथा गुरुकुलों में कैद भारतीय चिंतनधारा को स्वतंत्र करके सनातन भारतवर्ष (अखंड भारत) के प्रत्येक कोने तक पहुंचाने का सफल प्रयास किया। श्रीगुरु की विभिन्न यात्राएं उनके विस्तृत कर्म-क्षेत्र की साक्षी हैं। संभवतया आदि शंकराचार्य जी के बाद नानक जी पहले ऐसे संत थे जिन्होंने समस्त भारत को एकसूत्र में बांधने के लिए अखंड प्रवास करके दूर-दराज तक बसे भारतवासियों के कष्टों को निकट से देखा।

श्रीगुरु नानकदेव जी की इन विस्तृत यात्राओं में उनके अभिन्न भक्त तथा सहयोगी भाई मरदाना उनके साथ परछाई की तरह रहे। इनकी पहली आध्यात्मिक यात्रा (सन् 1497 से 1509 तक) पूर्वी भारत की ओर थी। इस यात्रा में कुरुक्षेत्र, दिल्ली, मथुरा, आगरा, वृंदावन, गया, ढाका एवं कामरूप (आसाम) आदि स्थानों पर पड़ाव डाले गए। गुरु महाराज की दूसरी यात्रा (सन् 1510 से 1540 तक) दक्षिण भारत की विस्तृत यात्रा थी। इस यात्रा के समय रामेश्वर एवं श्रीलंका तक उनका आध्यात्मिक प्रकाश फैला।

अपनी तृतीय यात्रा में श्री गुरु महाराज कश्मीर, मेरु पर्वत, अफगानिस्तान, तिब्बत इत्यादि स्थानों पर ईश्वरीय उपदेश देने पहुंचे। परमपिता परमात्मा के इस मानवी संदेश वाहक ने अपनी चौथी यात्रा में मक्का, मदीना, बगदाद तक संसारी लोगों को समरसत्ता का पाठ पढ़ाया।

श्रीगुरु नानक का ध्यान अब विदेशी आक्रान्ताओं के पांव तले कुचले जा रहे असंख्य भारतीयों की ओर गया। विधर्मी बाबर के हमलों, अत्याचारों और माताओं-बहनों के हो रहे शील भंग को देख कर वे कराह उठे। उन्होंने बाबर की सेना को पाप की बारात की संज्ञा देते हुए उसके द्वारा किए जा रहे जुल्मों का

मार्मिक वर्णन अपनी 'बाबर वाणी' रचना में किया है।

श्रीगुरु नानकदेव युगपुरुष, आध्यात्मिक संत, मानवतावादी कवि, अद्‌भुत समाज सुधारक एवं गहन भविष्य दृष्टा थे। उन्होंने भारत पर होने वाले विदेशी हमलों की कल्पना कर ली थी। उन्होंने अपनी रचनाओं 'आसा दी वार' एवं 'चौथा तिलंग राग' में देश की दशा पर चिंता व्यक्त की थी। इसी चिंता के साथ उन्होंने समस्त भारतवासियों को चेतावनी देते हुए एकजुट होकर प्रतिकार करने का आह्वान भी किया था।

जब बाबर अफगानिस्तान को पार करता हुआ अपनी सेना के साथ पंजाब की ओर बढ़ रहा था तो श्रीगुरु नानकदेव ने भविष्य में आने वाले संकट का संकेत देते हुए बाबर को आक्रमणकारी घोषित कर दिया था। श्रीगुरु महाराज जी के अनुसार "इन विधर्मी हमलावरों को धर्म एवं सत्य की कोई पहचान नहीं है और ना ही अपने अमानवीय अत्याचारों पर कोई पश्चाताप अथवा लज्जा है।'' भारत की धरती पर खून की नदियां बहाई जा रही हैं। श्रीगुरु नानकदेव की इस पीड़ा में भविष्य में होने वाले हमलों और उनके प्रतिकार के लिए समाज की तैयारी के संकेत भी दे दिए थे। भारत पर मुगलों की राजसत्ता, उनके द्वारा हिंदुओं का उत्पीड़न एवं धर्म परिवर्तन की भविष्यवाणी भी कर दी गई थी। मुगलों का पतन कैसे होगा, कौन करेगा तथा समाज में क्षात्र धर्म का जागरण कैसे होगा इत्यादि पूरा खाका उनकी रचनाओं में मिलता है।

श्रीगुरु नानकदेव ने अपनी आध्यात्मिक शक्ति के बल पर अपने अंतर्मन की वेदना को 'अकाल-पुरख' के समक्ष प्रगट भी किया था, वे कहते हैं, "खुरासान खमसाना किआ, हिन्दुस्तान डराया आपो दोस न दे करता, जम कर मुगल चढ़ाया, एती मार पई कुरलाणे, तैंकी दर्द न आया।''

इस रचना में श्रीगुरु महाराज जी तत्कालीन अवस्था का मार्मिक वर्णन करते हुए परमात्मा को उलाहना देते हुए कहते हैं, "मुगलों ने हिन्दुस्तान को डराया, जुल्म किए, भारतीयों को भयंकर अत्याचार सहने पड़े तब भी दर्द नहीं आया।'' श्रीगुरु के अनुसार परमात्मा ने खुरासान को तो सुरक्षित कर दिया और हिन्दुस्तान में बाबर के रूप में यमराज को भेज दिया।

इन शब्दों में श्रीगुरु की आध्यात्मिक शक्ति का संकेत मिलता है। उन्होंने भविष्य में होने वाले संघर्ष का अनुमान लगाकर अपनी वाणी में भारतीयों को विधर्मी शासकों को उखाड़ फेंकने के लिए बलिदान के लिए आह्वान भी कर दिया था। वे अपनी वाणी में स्पष्ट आह्वान करते हैं, "जे तऊ प्रेम खेलण का चाओ सिर धर तली गली मोरी आओ।'' अर्थात् असत्य एवं अधर्म को समाप्त करने के लिए अपने शीश भी देने के लिए तैयार रहो।

श्रीगुरु ने अपनी वाणी में भविष्य में होने वाले संघर्षों का संकेत देते हुए कहा था, "कोई मर्द का चेला (वीरपुरुष) जन्म लेगा, जो इन अत्याचारों का सामना करेगा।'' ऐसा हुआ भी। मुगलों के अमानवीय कृत्यों को समाप्त करने के उद्देश्य से दस गुरु परंपरा का श्रीगणेश हुआ और इसी में से 'खालसा पंथ' का जन्म हुआ।

श्रीगुरु नानकदेव द्वारा प्रकाशित सिद्धांतों से प्रेरित दशगुरु परम्परा ने भारत, भारतीय संस्कृति, भारत का गौरवशाली इतिहास तथा विशाल हिन्दू समाज की रक्षा के लिए अनुपम बलिदानों का स्वर्णिम इतिहास रच दिया। यही अद्‌भुत और अतुलनीय बलिदान वीरव्रति खालसा पंथ की नींव के पत्थर बने। यही बलिदान उस खालसा पंथ का आधार और कारण बने जिसने विदेशी/विधर्मी तथा अमानवीय मुगलिया दहशतगर्दी को समाप्त करने में मुख्य भूमिका निभाई।

इसे ईश्वरीय योग ही कहा जाएगा कि धर्म के शत्रु अत्याचारी बाबर से औरंगजेब तक के विनाशकारी कालखंड मे ही श्रीगुरु नानकदेव से दशमेश पिता श्रीगुरु गोविंदसिंह तक की 'शस्त्र और शास्त्र' पर आधारित विचारधारा ने जन्म लिया और भारत की सशस्त्र भुजा के रूप में खालसा पंथ ने अपने धार्मिक, सामाजिक और राष्ट्रीय कर्तव्य को निभाया। ❐

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार और लेखक हैं)

श्री राम जानकी विवाह का आध्यात्मिक दर्शन

■ सुभाष चन्द्र बग्गा

गोस्वामी तुलसीदास जी ने श्री रामचरितमानस में विदेहनन्दिनी सीताजी और भगवान श्री रामचन्द्र जी के विवाह में जिन परम्पराओं का अत्यन्त मार्मिक वर्णन प्रस्तुत किया है उसका आनन्द प्राप्त करने के लिए कुछ समय के लिए अपने अन्तःकरण को जनकपुर के मण्डप में प्रवेश करायें और इस विवाह के रहस्य को जानने के लिए उसमें आध्यात्म के तत्व को जानने का प्रयत्न करें।

आनन्दकन्द दूलह श्री रामचन्द्र जी को मण्डप में आसन पर विराजमान देखकर वर पक्ष और वधू पक्ष दोनों ओर के समाज में आनन्दमयी स्थिति हो रही है। उचित समय जानकर गुरु वशिष्ठ जी ने आदरपूर्वक शतानन्द जी को बुलाया और राजकुमारी जानकी जी को मण्डप में लाने के लिए कहा।

रनिवास की सोलह श्रृंगार में सजी हुई स्त्रियां सखियां शतानन्द जी के अनुरोध पर मनोहर गान करती हुई आदरसहित रूप राशि और सब प्रकार से पवित्र मिथिला कुमारी को मण्डप में लाती हैं। उस अवसर की सब रीति, व्यवहार और कुलाचार दोनों कुल गुरुओं ने किये। गौरी, गणेश और अन्य सभी देवताओं की पूजा करके सीताजी को सुन्दर आसन दिया।

दूलह श्री राम को देखकर महाराज जनक और रानी सुनयना प्रेम मग्न हो गये। सबसे पहले उन्होंने श्री राघवेन्द्र का पाद-प्रक्षालन किया।

महाराज जनक और रानी सुनयना सोने के कलश और मणिओं की सुन्दर परात, आनन्दित होकर भगवान राम के सामने रखते हैं। स्वर्ण कलश में पवित्र, सुगंधित और निर्मल जल भरा हुआ है।

जितने विवाह शास्त्रीय विधि से सम्पन्न होते हैं, उनमें सबसे पहले वर का चरण-प्रक्षालन किया जाता है। उसी परम्परा को निभाते हुए महाराज जनक और सुनयना जी दिव्य जल से भगवान श्री राम के चरण पखारने लगे।

बरु बिलोकि दंपति अनुरागे।
पाय पुनीत पखारन लगे।।

व्यवहारिक जगत में वर के चरण धोने की परम्परा का एक विलक्षण तात्पर्य है। वर पक्ष लेने वाला है, सकाम है तथा कन्या पक्ष देने वाला है, निष्काम है।

निष्कामता में अभिमान उत्पन्न होने की सम्भावना है कि मैं देने वाला हूं। लेने वाले के अन्तःकरण में तो कृतज्ञता की भावना होनी ही चाहिए परन्तु देने वाले को भी यह सोचना चाहिए कि लेने वाले व्यक्ति ने मेरी वस्तु स्वीकार कर मेरे ऊपर बड़ी कृपा की है।

आध्यात्मिक तौर पर चरण प्रक्षालन का तात्पर्य है कि सबसे पहले अनुराग के जल से प्रभु का चरण पखार कर हम अपने अहंकार को पूरी तरह भगवान में अर्पण कर दें और जब हमारे अन्तःकरण से दातापन (निष्कामता) का अभिमान जाता रहे तब हम अनुभव करें कि प्रभु ही कृपा करके मुझे स्वीकारने आये हैं, तभी मानो चरण-प्रक्षालन की सच्ची सार्थकता है।

चरण-प्रक्षालन के बाद पाणिग्रहण की रीति आरम्भ होती है जिसमें महाराज जनक अपनी बेटी सीताजी का हाथ अपने हाथों में लेकर श्री राघवेन्द्र के कर-कमलों में प्रस्तुत करते हैं। कुलगुरु शंखनाद करते हैं, चारों ओर पुष्प की वर्षा होने लगती है तथा देवता, मुनि और ब्रह्मा आदि सभी आनन्द में भर उठते हैं।

बर कुअरि करतल जोरि
साखो चारु दोउ कुलगुर करै।
भयो पानिगहनु बिलोकि बिधि
सुर मनुज मुनि आनंद भरै।।

इसका आध्यात्मिक तात्पर्य क्या है? गोस्वामी तुलसी दास जी इस विषय में अहंता और ममता से मुक्त होने का उपाय हमें भगवान श्री राघवेन्द्र और विदेहनन्दिनी सीताजी के विवाह के माध्यम से बतला देते हैं।

महाराज जनक ने जब जानकी जी का हाथ प्रभु की ओर बढ़ाया तथा प्रभु ने उस हाथ को पकड़ लिया, उस समय सबने यही कहा कि ईश्वर तो न पकड़ने वाला था, पर आज जब वही पकड़ने लगा, तो अब हमें चिन्ता की कोई आवश्यकता नहीं। क्योंकि अब तो हम भी अपने हाथ बढ़ा देंगे। इस प्रकार पाणिग्रहण की क्रिया में जीव को यह संदेश प्राप्त होता है कि हमारी सुरक्षा का उपाय ही है कि ईश्वर हमें पकड़ ले।

कन्या दान का अर्थ है- ममता का त्याग। अर्थात् वस्तु को ममता से हटा लेना। यद्यपि दान के बाद वस्तु का स्वरूप नहीं बदलता पर यह अन्तर स्पष्ट दिखाई देता है कि दान देने से पूर्व तो वस्तु से हमारा ममत्व जुड़ा रहता है तथा उसे हम अपना कहते हैं पर दान देने के पश्चात् उस वस्तु से हम ममता हटा लेते हैं।

पूजा का तात्पर्य यह कभी नहीं है कि हम मानें कि हमने भगवान को कुछ दिया है अपितु पूजा का वास्तविक रूप तो तभी है जब हमें प्रतीत हो कि भगवान ने कृपा करके हमारी अहंता और ममता को स्वीकार किया है।

महाराज जनक जब सीता जी को श्री राम के प्रति अर्पण करते हैं उस समय उनके अन्तःकरण में यह भावना नहीं थी कि मैं अपनी पुत्री श्रीराम को दे रहा हूं। उनके मन में यह भावना थी कि आपकी वस्तु आपको समर्पण करता हूं।

त्वदीयं वस्तु श्रीराम तुम्यमेव समर्पितम्।

जैसे हिमाचल ने शिवजी को पार्वती जी और सागर ने भगवान विष्णु को लक्ष्मी जी दी थी, वैसे ही जनक जी ने श्री रामचन्द्र जी को सीता जी समर्पित की, जिससे विश्व में सुन्दर नवीन कीर्ति छा गई।

हिमवंत जिमि गिरिजा महेसहि
हरिहि श्री सागर दई।
तिमि जनक रामहि सिय समरपी
बिस्व कल कीरति नई।।

दान से भी उत्कृष्ट है समर्पण। समर्पण में यही अनुभव हो कि यह वस्तु तो दूसरे की थी पर संयोग से मुझे मिल गई और जिसकी वस्तु थी उसे लौटाकर आज मैं चिन्तामुक्त हो गया।

मेरा मुझको कुछ नहीं जो कुछ है सो तोर।
तेरा तुझको सौं पिया क्या लागै है मोर।।

इस प्रकार कन्यादान के रूप में जब ममता और चरण-प्रक्षालन के रूप में अहंता पूरी तरह छूट जाती है तब भगवान बंधन में बंध जाते हैं। विधिपूर्वक हवन करके सीता जी की पंचरंगी चूनर और भगवान् श्री राम के पीले पीताम्बर को बांधकर ग्रंथिबंधन होने के पश्चात् भांवरी की क्रिया होने लगी।

तुलसीदास जी कहते हैं कि विवाह मण्डप के बीच में मणियों के खम्भे लगे हुए हैं और भांवरी देते समय श्रीराम जी और श्री सीता जी की सुन्दर परछाहीं मणियों के खम्भों में जगमगा रही हैं मानो कामदेव और रति बहुत से रूप धारण करके श्रीराम के अनुपम विवाह को देख रहे हों।

राम सीय सुंदर प्रतिछाहीं।
जगमगात मनि खंभन माहीं।।
मनहुं मदन रति धरि बहुरूपा।
देखत राम बिआहु अनूपा।।

वास्तव में ऐसा कोई स्थान नहीं जहां पर श्रीराम न हों। इसके द्वारा ईश्वर की सर्वव्यापकता का समर्थन हो रहा है। तुलसीदास जी अपनी प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहते हैं कि जब कोई व्यक्ति भुलक्कड़ होता है तब उसके कपड़े में गांठ बांध दी जाती है जिससे कि भूल न जाए। यह भांवरी की गांठ प्रभु को याद दिलाती हुई चल रही है कि प्रभु! आपको जीव पर करुणा करनी है, भूल मत जाइए।

भांवरी के बाद सिंदूर-दान विवाह के कृत्यों में एक बहुत महत्वपूर्ण विधि है। कर्मकाण्ड में तो लोग नित्य ही देखते हैं कि विवाह के मण्डप में कन्या के सिर में वर सिंदूर अर्पित करता है। फिर इस विवाह में कौन-सी नई बात है?

गोस्वामी जी पहले कहते हैं कि श्रीरामचन्द्र जी सीता जी के सिर में सिन्दूर दे रहे हैं, यह शोभा किसी प्रकार भी नहीं कही जाती।

राम सीय सिर संदुर देहीं।
सोभा कहि न जाति बिधि केहीं।।

फिर उन्होंने एक बड़ी ही विचित्र उपमा देते हुए कहा जब भगवान श्रीराम विदेहनन्दिनी सीताजी के माथे में सिन्दूर लगाने लगे तो ऐसा लगा कि जैसे सर्प कमल में लाल पराग लेकर अमृत के लोभ से चन्द्रमा को विभूषित कर रहा हो। (यहां श्रीराम के हाथ को कमल की, संेदूर को परागकी, श्रीराम की श्याम भुजा को सांप की और सीता जी के मुख को चन्द्रमा की उपमा दी गई है।)

अरुन पराग जलजु भरि नीके।
ससिहि भूष अहि लोभ अमी के।।

गोस्वामी जी प्रभु की भुजा को सर्प की उपमा देते हैं। उनका अभिप्राय है कि जो सबका विनाशक सर्प (काल) है, जब वही सिन्दूर के रूप में सौभाग्य-चिन्ह अर्पित करने के लिए प्रस्तुत हो रहा है, तब तो फिर कन्या का सौभाग्य कितना अखण्ड होगा, इसको तो चिन्ता ही नहीं करनी चाहिए। सर्प की लोग आलोचना करते हैं कि इसमें तो विष ही विष है। इस कलंक को धोने के लिए उसने निर्णय लिया कि चन्द्रमा के पास चलकर अमृत उधार ले लें। इसका सांकेतिक तात्पर्य यह है कि ईश्वर की एक शक्ति-संहार शक्ति तो प्रसिद्ध है पर उनकी एक दूसरी शक्ति और है जिसे अनुग्रह शक्ति कहते हैं। प्रभु कृपा भी करते हैं और संहार भी करते हैं। संहार शक्ति तो भगवान राम में पहले से ही थी पर कृपा और करुणा उन्होंने सीताजी से उधार ली है। गोस्वामी जी यह बताना चाहते हैं कि जब तक भगवान राम के साथ विदेहनन्दिनी श्री सीता न हों, जब तक ईश्वर के साथ-साथ साक्षात भक्ति न हो, तब तक उनकी दोनों शक्तियों का समन्वय नहीं हो सकता। इसलिए गोस्वामी जी ने चन्द्रमा और सर्प के मिलन के माध्यम से सार्थकता प्रदान की।

इस प्रकार से यह सिन्दूर-दान एक ओर यदि ईश्वर के अनुग्रह तथा संहार शक्ति का मिलन है तो दूसरी ओर सौभाग्य की अखण्डता का प्रतीक है तथा त्यागी ब्रह्म के रागी बनने का क्रम है।

इस प्रकार जब विदेहनन्दिनी सीता तथा भगवान श्रीराम का मंगल परिणय हो जाता है तब जीव को ऐसा प्रतीत होता है कि हमारे अन्तर्जीवन की सारी समस्याओं का समाधान हो गया।

श्रीराम जानकी विवाह प्रसंग में कर्मकांड की जो क्रम से विधि है उसमें प्रभु के द्वारा लोक-मर्यादा का पालन तो है, किन्तु उसका उद्देश्य केवल मर्यादा की स्थापना मात्र ही नहीं अपितु उससे भी बड़ा उसका उद्देश्य भक्ति तथा ज्ञानपरक है। ❐

प्रेरक प्रसंग

बुद्धिमान हंस

एक बहुत बड़ा विशाल पेड़ था। उस पर बीसीयों हंस रहते थे। उनमें एक बहुत सयाना हंस था, बुद्धिमान और बहुत दूरदर्शी। सब उसका आदर करते 'ताऊ' कहकर बुलाते थे।

एक दिन उसने एक नन्ही-सी बेल को पेड़ के तने पर बहुत नीचे लिपटते पाया। ताऊ ने दूसरे हंसों को बुलाकर कहा, देखो, इस बेल को नष्ट कर दो। एक दिन यह बेल हम सबको मौत के मुंह में ले जाएगी।

एक युवा हंस हंसते हुए बोला, ताऊ, यह छोटी-सी बेल हमें कैसे मौत के मुंह में ले जाएगी?

सयाने हंस ने समझाया, आज यह तुम्हें छोटी-सी लग रही है। धीरे-धीरे यह पेड़ के सारे तने को लपेटा मारकर ऊपर तक आएगी। फिर बेल का तना मोटा होने लगेगा और पेड़ से चिपक जाएगा, तब नीचे से ऊपर तक पेड़ पर चढ़ने के लिए सीढ़ी बन जाएगी। कोई भी शिकारी सीढ़ी के सहारे चढ़कर हम तक पहुंच जाएगा और हम मारे जाएंगे।

दूसरे हंस को यकीन न आया, एक छोटी-सी बेल कैसे सीढ़ी बनेगी?

तीसरा हंस बोला, ताऊ, तू तो एक छोटी-सी बेल को खींचकर ज्यादा ही लंबा कर रहा है।

एक हंस बड़बड़ाया, यह ताऊ अपनी अक्ल का रौब डालने के लिए अंट-शंट कहानी बना रहा है।

इस प्रकार किसी दूसरे हंस ने ताऊ की बात को गंभीरता से नहीं लिया। इतनी दूर तक देख पाने की उनमें अक्ल कहां थी?

समय बीतता रहा।

बेल लिपटते-लिपटते ऊपर शाखाओं तक पहुंच गई। बेल का तना मोटा होना शुरू हुआ और सचमुच ही पेड़ के तने पर सीढ़ी बन गई। जिस पर आसानी से चढ़ा जा सकता था।

सबको ताऊ की बात की सच्चाई सामने नजर आने लगी। पर अब कुछ नहीं किया जा सकता था क्योंकि बेल इतनी मजबूत हो गई थी कि उसे नष्ट करना हंसों के बस की बात नहीं थी।

एक दिन जब सब हंस दाना चुगने बाहर गए हुए थे तब एक बहेलिया उधर आ निकला।

पेड़ पर बनी सीढ़ी को देखते ही उसने पेड़ पर चढ़कर जाल बिछाया और चला गया।

सांझ को सारे हंस लौट आए और जब पेड़ से उतरे तो बहेलिए के जाल में बुरी तरह फंस गए।

जब वे जाल में फंस गए और फड़फड़ाने लगे, तब उन्हें ताऊ की बुद्धिमानी और दूरदर्शिता का पता लगा।

सब ताऊ की बात न मानने के लिए लज्जित थे और अपने आपको कोस रहे थे।

ताऊ सबसे रुष्ट था और चुप बैठा था।

एक हंस ने हिम्मत करके कहा, ताऊ, हम मूर्ख हैं, लेकिन अब हमसे मुंह मत फेरो।

दूसरा हंस बोला, इस संकट से निकालने की तरकीब तू ही हमें बता सकता है। आगे हम तेरी कोई बात नहीं टालेंगे

सभी हंसों ने हामी भरी तब ताऊ ने उन्हें बताया, मेरी बात ध्यान से सुनो।

सुबह जब बहेलिया आएगा, तब मुर्दा होने का नाटक करना। बहेलिया तुम्हें मुर्दा समझकर जाल से

निकालकर जमीन पर रखता जाएगा। वहां भी मरे समान पड़े रहना। जैसे ही वह अन्तिम हंस को नीचे रखेगा, मैं सीटी बजाऊंगा। मेरी सीटी सुनते ही सब उड़ जाना।

सुबह बहेलिया आया।

हंसों ने वैसा ही किया, जैसा ताऊ ने समझाया था।

सचमुच बहेलिया हंसों को मुर्दा समझकर जमीन पर पटकता गया। सीटी की आवाज के साथ ही सारे हंस उड़ गए।

बहेलिया अवाक होकर देखता रह गया। वरिष्ठजन घर की धरोहर हैं। वे हमारे संरक्षक एवं मार्गदर्शक हैं। जिस तरह आंगन में पीपल का वृक्ष फल नहीं देता, परंतु छाया अवश्य देता है। उसी तरह हमारे घर के बुजुर्ग हमे भले ही आर्थिक रूप से सहयोग नहीं कर पाते हैं, परंतु उनसे हमें संस्कार एवं उनके अनुभव से कई बातें सीखने को मिलती हैं।

बड़े-बुजुर्ग परिवार की शान हैं, वो कोई कूड़ा-करकट नहीं हैं, जिसे कि परिवार से बाहर निकाल फेंका जाए।

अपने प्यार से रिश्तों को सींचने वाले इन बुजुर्गों को भी बच्चों से प्यार व सम्मान चाहिए अपमान व तिरस्कार नहीं। अपने बच्चों की खातिर अपना जीवन दाँव पर लगा चुके इन बुजुर्गों को अब अपनों के प्यार की जरूरत है। यदि हम इन्हें सम्मान व अपने परिवार में स्थान देंगे तो लाभान्वित ही होंगे। ऐसा न करने पर हम अपने हाथों अपने बच्चों को उस प्यार, संस्कार, आशीर्वाद व स्पर्श से वंचित कर रहे हैं, जो उनकी जिंदगी को सँवार सकता है।

याद रखिए किराए से भले ही प्यार मिल सकता है परंतु संस्कार, आशीर्वाद व दुआएँ नहीं। यह सब तो हमें माँ-बाप से ही मिलती है। ❐

प्रवचन : क्या है प्रार्थना

कहते हैं कि प्रार्थना हृदय की पुकार है, श्रद्धा, आस्था और विश्वास की अभिव्यक्ति है। प्रार्थना यदि हृदय से की जाए तो वह परमपिता प्रार्थना को सुनता जरूर है। वह समदर्शी है, सबको सुखी देखना चाहता है। प्रार्थना एक बीज की तरह है, जिसे बड़े से बड़े साधक को अपने जीवन में बोना ही पड़ता है। भक्त और भगवान के बीच संवाद का सरल और सशक्त माध्यम है-प्रार्थना। प्रार्थना मनुष्य को सबल बनाने के साथ-साथ आध्यात्मिक ऊर्जा से भरती है। प्रार्थना जीसस ने की, बुद्ध ने की, महावीर ने की नानक ने की, मीरा ने की। सभी महापुरुषों ने इसे जीवन में उतारा। इस सर्वशक्तिमान परमेश्वर की प्रार्थना से अभीष्ट फल प्राप्त होता है। प्रार्थना एक प्रकार की अराधना है, जिसे व्यक्ति यदि हृदय की गहराइयों से करे तो वह प्रभु कृपा जरूर करता है। जीवन में कई बार जब सारे रास्ते बंद हो जाते हैं और लगता है कि अब कोई साथ नहीं है तो ऐसे में प्रार्थना आस्था की किरण बनकर व्यक्ति का पथ-प्रदर्शन करती है। प्रार्थना में हृदय जितना पवित्र होगा, जितनी शुचिता होगी, वह उतना ही असर करेगी। प्रार्थना से वह सब भी मिल जाता है जो कई बार अप्राप्य होता है।

प्रार्थना करने वाले व्यक्ति यदि सबके भले का भाव रखते हुए प्रार्थना करता है तो वह निश्चित ही ऊंचाई को प्राप्त करता है। सात्विक प्रार्थना वह कही गयी है, जो निष्काम होती है, जो स्वयं के हृदय में शांति करने के साथ-साथ एक स्वस्थ समाज के निर्माण में सहायक होती है। जो प्रार्थना सबके भले की कामना करे, वही सच्ची होती है। प्रार्थना से कई बार हमारा प्रारब्ध भी बदल जाता है। जो व्यक्ति सच्चा प्रार्थना वाला होता है, वह अहंकार, घृणा, वैर, द्वेष, ईर्ष्या आदि से कोसों दूर रहते हुए अपने जीवन को संकीर्णताओं में न रखते हुए ऊंचाई की तरफ ले जाता है। प्रार्थना जीवन का आधार है और यही हमें उस परमात्मा के निकट पहुंचाकर उसका सामीप्य कराती है।

– स्वामी हरि चैतन्य पुरी

एकादशी व्रत के लाभ

■ बिमल कुमार सिंह

गत 12 अक्टूबर की सुबह मुझे एम.आर.आाई. मशीन के भीतर ले जाने की तैयारी हो रही थी। अब तक मैं अपने घर के तीन लोगों (मां, बहन और भाई) को एम.आर.आई. मशीन से जांच करवाने ले गया हूं। खुद एम.आर.आई. मशीन के भीतर लेटने का यह पहला अनुभव था। दरअसल मैं 11 अक्टूबर को महाराष्ट्र के दक्षिणी जिले कोल्हापुर में स्थित श्रीक्षेत्र सिद्धगिरि मठ गया हुआ था। मठ के स्वामित्व में वहां दो सर्वसुविधा संपन्न हास्पिटल चलते हैं- एक आयुर्वेदिक और दूसरा नए जमाने वाला। यहां नई और प्राचीन दोनों विधियों का बड़ा सुंदर समन्वय है। सिद्धगिरि मठ के परम पूज्य स्वामी अदृश्य काडसिद्धेश्वर जी का मेरे ऊपर विशेष स्नेह रहता है। ग्रामयुग अभियान में मैं उनकी बड़ी भूमिका देखता हूं। जब मैं उनसे मिला तो उन्होंने कहा कि 50 साल के हो गए हो। अगर लंबा काम करना है तो एक बार सभी आवश्यक स्वास्थ्य जांच करवा लो। इसके लिए उन्होंने अपने कुछ लोगों को काम पर भी लगा दिया। अगले दिन बातचीत में जब मैंने डाक्टर को बताया कि मेरी मां, भाई और बहन को ब्रेन ट्यूमर हो चुका है तो डाक्टर ने कहा कि आपको एम.आर.आई भी करवा लेना चाहिए। एक-एक करके फिर मेरे दूसरे टेस्ट भी हुए। 13 अक्टूबर को जब सभी टेस्ट का परिणाम आया तो मुझे यह जान कर संतोष हुआ कि मैं पूरी तरह से स्वस्थ हूं। जो डाक्टर मेरी जांच कर रहे थे, उनका नाम डाक्टर सचिन है। मेरी दिनचर्या और आदतों को जानने के बाद उन्होंने कहा कि मेरे स्वास्थ्य के पीछे एकादशी व्रत एक मुख्य कारण है। बता दूं कि यह व्रत मैं पिछले कई वर्षों से करता हूं। लोग सामान्यत: यह व्रत धार्मिक कारणों से शुरू करते हैं, लेकिन मेरे मामले में ऐसा नहीं रहा। यह बात वर्ष 2018 की है। उस वर्ष मेरी कंपनी संवाद मीडिया प्राइवेट लिमिटेड को जबर्दस्त घाटा हुआ था। घाटा इतना अधिक था कि मुझे सब कुछ बंद कर देना पड़ा। यह घाटा मेरे शरीर और मन को स्थायी नुक्सान न पहुंचा दे, इसके लिए मैं कुछ उपाय करना चाह रहा था।

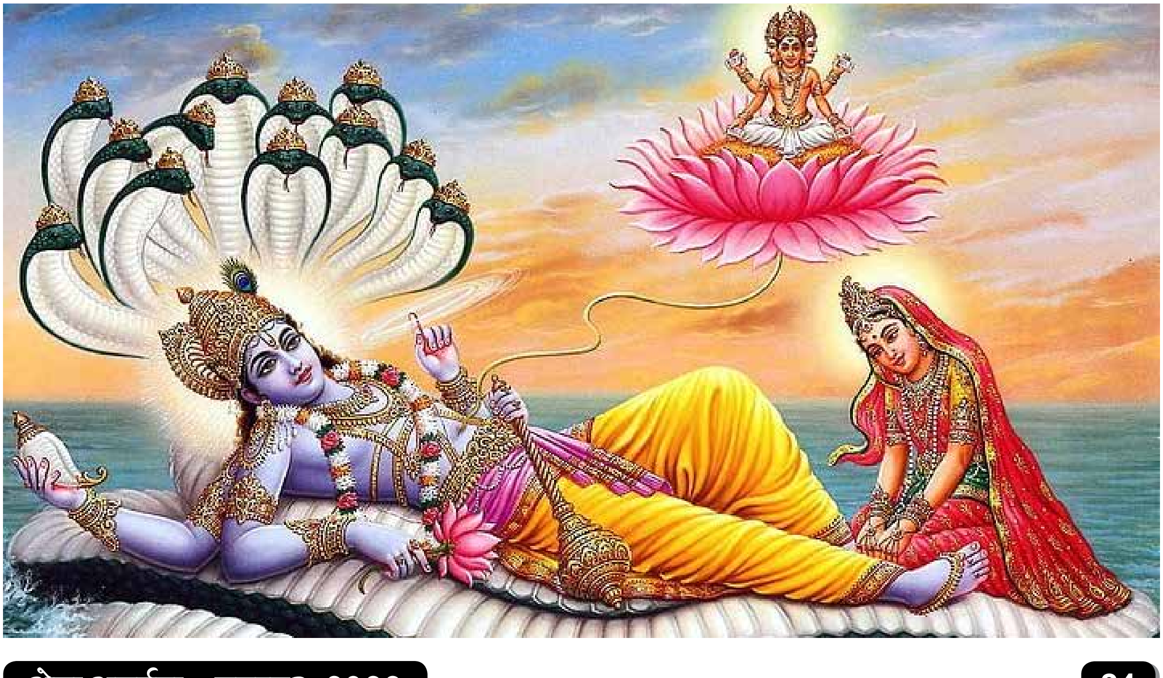

उसी दौरान मुझे आटोफैजी के बारे में पता चला। दो वर्ष पहले अर्थात 2016 में जापानी वैज्ञानिक Yoshinori Ohsumi को औषधि विज्ञान के क्षेत्र में विशेष खोज के लिए नोबेल पुरस्कार दिया गया था। योशिनोरी ने पता लगाया था कि जब मनुष्य शरीर को 24 घंटे तक भोजन नहीं मिलता तब Autophagy नामक एक विशिष्ट प्रक्रिया शुरू होती है। इसके द्वारा शरीर अपनी क्षतिग्रस्त कोशिकाओं को नष्ट कर उन्हें ऊर्जा में बदल देता है। सरल शब्दों में कहें तो 24 घंटे का उपवास रखने पर शरीर अपनी ही बीमार कोशिकाओं को खा जाता है। इससे कैंसर जैसी कई असाध्य बीमारियों का खतरा कम हो जाता है। जब हम पेट को पर्याप्त समय के लिए खाली नहीं रखते तो Autophagy की प्रक्रिया नहीं हो पाती। इसके चलते शरीर में क्षतिग्रस्त कोशिकाएं इकट्ठा होती रहती हैं और वही अंततः कई बीमारियों का कारण बनती हैं।

2018 में चूंकि मेरा आफिस बंद हो चुका था। बिजनेस में क्या नया करूं, समझ में नहीं आ रहा था, इसलिए पूरा ध्यान शरीर और मन को स्वस्थ रखने पर केन्द्रित कर दिया। ।नजवचींहल पर जब और पढ़ना शुरू किया तो पता चला कि इसके लिए एक विशेष प्रकार का भोजन (कीटो डाइट) बड़ी कारगर है। कीटो डाइट में शरीर को केवल फैट और प्रोटीन दिया जाता है, कार्बोहाइड्रेट की मात्रा को लगभग खत्म कर दिया जाता है। एक शाकाहारी व्यक्ति के लिए इस डाइट को निभा ले जाना असंभव सा होता है, लेकिन मैंने 6 महीने तक इसे किया। उन दिनों पनीर, दही, घी और पत्तीदार सब्जियों के अलावा मैं कुछ भी नहीं खाता था। सभी प्रकार के अनाज, दूध, फल, और जमीन के नीचे उगने वाले कंद आदि मेरे लिए वर्जित थे। कीटो डाइट में चीनी ही नहीं हर मीठी चीज मना होती है, इसलिए मैंने इनको भी ना कह दिया था।

लोग प्रायः वजन कम करने के लिए कीटो डाइट पर जाते हैं लेकिन मेरे मामले में यह मुख्य कारण नहीं था। मेरी इच्छा तो बस स्वस्थ रहने की थी। इस डाइट के बाद शरीर में ज्ञमजवेपे नामक एक प्रक्रिया होती है जिसे वैज्ञानिक स्वास्थ्य के लिए (विशेष रूप से बौद्धिक कार्य के लिए) बहुत अच्छा मानते हैं। मैं इस प्रक्रिया का स्वयं अनुभव करना चाहता था। इसके लिए डाइट पर नियंत्रण के साथ-साथ उन दिनों हर रोज योग, व्यायाम और 5 किमी की दौड़ लगाना भी मेरी दिनचर्या का हिस्सा था।

अब पीछे मुड़कर देखता हूं तो लगता है कि 2018 में बिजनेस का घाटा वास्तव में बहुत फायदेमंद साबित हुआ। उस दौरान मैंने स्टोइक दार्शनिकों के बारे में भी खूब पढ़ा। घाटे के मानसिक त्रास को कम करने में मुझे इससे मदद मिली। दर्शनशास्त्र की यह शाखा प्राचीन यूनान और रोम में विकसित हुई थी। इसके अनुसार अगर जीवन में सुखी होना है तो आपको सुख-सुविधाओं की लत छोड़नी पड़ेगी। हमेशा सुख-सुविधाओं के बीच रहना दुखी रहने का अचूक उपाय है। स्टोइक फिलासफी जोर देकर कहती है कि सभी को बीच-बीच में स्वेच्छा से वंचित जीवन जीने का अभ्यास करना चाहिए। इसमें उपवास को एक प्रमुख उपाय बताया गया है। पेट भरने का मजा आपको तभी महसूस होगा जब आप इसे बीच-बीच में खाली रखेंगे। रोमन सम्राट मार्कस ओरेलियस जिसके कदमों में दुनिया का सारा वैभव पड़ा था, वह स्वयं स्टोइक फिलासफर होने के साथ-साथ इस दर्शन का अभ्यासी भी था। विलासितापूर्ण जीवन जीने में उसे कोई रुचि नहीं थी।

2018 में मैने अपने शरीर पर जो ढेर सारे प्रयोग किए, उसके पीछे दो किताबों की भी बड़ी भूमिका रही। पहली किताब का नाम है- ऐन्टी फ्रैजाइल। इसका लेखक नसीम निकोलस तालिब कहता है कि मानव शरीर की प्रवृत्ति एंटी फ्रैजाइल है। अर्थात जब इसे एक निश्चित सीमा के भीतर विपरीत परिस्थितियों में डाला जाता है, उसे चुनौती दी जाती है, उसे कष्ट दिया जाता है तो यह अपने को और बेहतर बनाने में लग जाता है। यदि शरीर को हमेशा सुख-सुविधाओं के बीच रखा जाए तो वह धीरे-धीरे स्वयं को ही नष्ट करने की प्रक्रिया शुरू

कर देता है। ऐसी स्थिति में उसे औषधियों की मदद से लंबे समय तक जीवित तो रखा जा सकता है किंतु उसे निरोग रखना असंभव होगा। अगर शरीर को निरोगी रखना है तो उसे उपवास आदि के जरिए आपात् स्थिति का संकेत देते रहना चाहिए। इससे वह अपने को तैयार और चुस्त दुरुस्त रखता है।

दूसरी किताब जिसने मुझे राह दिखाई, उसका नाम है नज (Nudge)। युनिवर्सिटी आफ शिकागो के अर्थशास्त्री RH Thailer और हार्वर्ड ला स्कूल के प्रोफेसर CR Sunstein ने अपनी इस किताब में ऐसी कई राज की बातें बताई हैं जिनकी मदद से आप अपने मन को कठिन से कठिन काम करने के लिए आसानी से तैयार कर सकते हैं। उदाहरण के लिए यदि आपको हर घंटे मुंह चलाने की आदत है और आप 24 घंटे का उपवास करना चाहते हैं तो आपको यह किताब पढ़नी पड़ेगी। उसी तरह यदि आपको दो कदम चलने में भी कष्ट होता है और आप मैराथन दौड़ना चाहते हैं, तब भी आप इस किताब की शरण में जा सकते हैं। एक ऐसी विधि जिसमें सब कुछ है।

जब कीटो डाइट करते हुए मुझे 6 महीने हो गए तब मुझे थोड़ी ऊबन शुरू हो गई। मेरी आहार शैली के कारण घर में और विशेष रूप से पत्नी को जो असुविधा हो रही थी, उसे लेकर भी मैं असहज हो रहा था। उसी दौरान एक दिन अचानक मेरा ध्यान एकादशी व्रत की ओर गया। मैंने पाया कि एकादशी व्रत की प्रक्रिया ऐसी है कि उसमें Autophagy और Ketosis दोनों प्रक्रियाएं एक साथ हो सकती हैं। फिर क्या था मैंने कीटो डाइट को अलविदा कहा और एकादशी व्रत को अपना लिया। धीरे-धीरे मुझे मालूम हुआ कि यह कितना अद्‌भुत व्रत है। मैंने ऊपर जिन बातों का जिक्र किया है, इसमें वे सब हैं। बात उतनी भर नहीं है। इस व्रत की इतनी खूबियां हैं कि मुझे उस पर अलग से लिखना पड़ेगा। इसमें तन के साथ-साथ मन और आत्मा को भी स्वस्थ रखने की व्यवस्था है।

एकादशी व्रत को एक विडियो गेम की तरह डिजाइन किया गया है। इसमें नज के मनौवैज्ञानिक सिद्धांतों का बड़ी खूबसूरती से इस्तेमाल हुआ है। अगर आपने पहले कभी व्रत नहीं किया है तो आपको लेवल-1 से शुरू करना होगा। इसमें व्रती से अपेक्षा की जाती है कि वह एकादशी के दिन भगवान विष्णु को प्रणाम करके चावल और मांसाहार का त्याग कर दे। शेष सब कुछ पहले जैसा ही रहेगा। लेवल-1 में भोजन की मात्रा और आवृत्ति पर कोई प्रतिबंध नहीं होता। जब आप इस प्रक्रिया को महीने में दो बार करना शुरू करेंगे तो आप धीरे-धीरे व्रत के अगले लेवल की ओर सहज ही बढ़ते चलेंगे। किसी अनुभवी व्यक्ति का साथ मिल जाए तो यह प्रक्रिया और प्रभावी हो जाती है।

एकादशी व्रत के पारलौकिक और आध्यात्मिक फायदों को कोई माने या न माने, लेकिन इसके लौकिक फायदों से कोई इनकार नहीं कर सकता। दवाई और अस्पतालों के नाम पर हजारों-लाखों रुपए खर्च करने और तन-मन की पीड़ा से बचने का यह सबसे सहज और आसान तरीका है। आधुनिकतम अनुसंधान और अपने व्यक्तिगत अनुभव के आधार पर यह बात मैं दावे के साथ कह सकता हूं। ❐

संग्रहणीय अंक

सेवा समर्पण सितंबर 2022 में 'सुयश' ने कराया समाजसेवियों का संगम, संतों ने जगाई राष्ट्रीय चेतना,नारी का सम्मान करो कविता, भगवान श्रीकृष्ण का न्याय, वर्तमान का अदभुत दानवीर, कहानी: कमला की विदाई, कृतज्ञता, कश्मीर की रानी कोटा रानी की अमर कथा इत्यादि लेखों को पढ़ने को बार-बार मन करता है। इतनी सरल भाषा एवं शैली में लिखे लेख जीवन में समाज के लिए चिन्तन, मनन करने एवं अधिक से अधिक कार्य करने को प्रेरित करते हैं। कृतज्ञता का ब्रह्मपुरी जिला सेवा भारती द्वारा 'अभिनंदन कार्यक्रम' एक अच्छा प्रयास है।

स्मार्टफोन एक वरदान या अभिशाप

■ दीप्ति अग्रवाल

फोन एक ऐसी वस्तु है जो पहले केवल जीवन का छोटा सा हिस्सा था, जिससे परिवार, दोस्तों व रिश्तेदारों का हालचाल लिया जा सकता था या कोई अति आवश्यक समाचार देने हेतु उपयोग में लाया जाता था। किन्तु आजकल चाहे वह आम (सादा) या स्मार्ट फोन हो यह एक ऐसी वस्तु हो गई है, जो कि दिनचर्या में सबसे महत्व रखती है। अगर किसी दिन यह खराब हो जाए तो लगता है कुछ बहुत ही गड़बड़ हो गई है। समय काटे नहीं कटता है। सुबह होते ही सबसे प्हले और रात होते सबसे आखरी तक इस्तेमाल में आने वाली वस्तु, यह है फोन, जो कि हमारी सबसे बढ़कर जरूरत बन गया है और बने भी क्यों ना क्योंकि धरती प्र घट रही हर वस्तु की जानकारी फोन अपने में समेटे हुए हैं, चाहे वह सौन्दर्य, समाचार, जानकारी, राजनीति आदि कुछ भी हो। पूरी दुनिया इस छोटे से यंत्र में है। पर जिस तरह विज्ञान की तरक्की हुई, सभी चीजें आम से स्मार्ट हो गई। चाहे वह घड़ी, टेलीविजन, फोन, कपड़े धोनी की मशीन इत्यादि। बस इंसान ही आम रह गया है। तो क्या यह मनुष्य के लिए लाभकारी है या नुकसानदायक है। हर वस्तु के कुछ फायदे होते हैं, व कुछ नुकसान, किन्तु यह हम पर निर्भर करता है कि हम आने वाली नई तकनीक का किसी तरह व किसी हर तक उपयोग करेंगे। मेरे विचार से आप लोग सहमत हो या ना हो यह जरूरी नहीं। किन्तु कुछ खाली समय में बैठी सोचती हूं, तो लगता है शायद नुकसान ही ज्यादा होंगे चलिए मूल्यांकन करें। चलिए देखें कुछ लाभदायक बातें स्मार्टफोन की –

1. पूरी दुनिया की जानकारी अपने हाथों में
2. पूरी दुनिया की सड़कों व रास्तों की जानकारी अपने हाथों में
3. फोटो के रूप में अपनी यादों को रखा जा सकता है।
4. अपने जरूरी कागजात ाीा रखें जा सकते है फोन में
5. दूर रह रहे दोस्तों की जानकारी ढूंढी व मिलनान की जा सकती है।
6. किसी अकाशमिक खुशी व दुख की खबर मिनटों में, दूर रह रहे परिवार व रिश्तेदार को पहुंचाई जा सकती हे।
7. आजकल तो निमंत्रण पत्र भी फोन प्र ही भेजे जा रहे हें।
8. कैमरा, केलकुलेटर व रेडियो के सुख भी फोन पर ही।
9. आपके हाथों पर घड़ी की भी आवश्यकता नहीं।

आइए अब कुछ नुकसान देखते हैं –

1. परिवार के साथ बैठकर बातचीत बंद।
2. खाना खाते समय परिवार के साथ जरूरी विचार–विमर्श बंद
3. स्मरण शक्ति घटती जा रही है।
4. किताबें पढ़ना बंद।
5. समाचार पत्र व अन्यच प्ुस्तकों से लेख व जानकारी खोजना बंद।
6. सर्दी में बैठ बाहर पड़ोसियों के साथ बातचीत बंद।
7. सिलाई, कढ़ाई, स्वेटर बुनना बंद
8. आंखों पर बुरा असर।
9. मस्तिष्क प्र भी बुरा असर
10. रेडिएशन से हृदय पर भी बुरा असर।
11. आलस्य भी बढ़ रहा है
12. चोरी–चकारी की वारदातें बढ़ती जा रही हैं।

इस तरह कुछ अच्छी व कुछ बुराई बसी है हमारे फोन में। आज देखिए अगर मैं फोन प्र व्यस्त होती तो मैं यह लेख भी ना लिख पाती। फोन को छोड़ मैंने सोचा समय का सदुपयोग कर यह लेख लिखा जाए, लेख पढ़ने वालों से अनुरोध करूंगी कि वह हमारी संस्कृति को जागृत रखते हुए नई तकनीक को अपनाएं जरूर किन्तु विचार करें कि किस हद तक, कि वह हमारे लिए वरदान बनें, अभिशाप नहीं। मनुष्य एक समाजिक प्राणी है तो सामाजिक ही रहे अकेले जीवन व्यतीत ना करें। आपस में प्रेम सद्भाव से परिवार व दोस्तों के साथ रहे। ❑

मेधावी विद्यार्थी सम्मान समारोह-2022

सेवा भारती दिल्ली (दक्षिणी विभाग) द्वारा एवं यूथ फार सेवा और टींस फार सेवा ने मेधावी विद्यार्थी सम्मान समारोह-2022 का कार्यक्रम जी.एल.टी. सरस्वती बाल मंदिर, नेहरू नगर नई दिल्ली में आयोजित किया। इस कार्यक्रम में हमने दक्षिणी विभाग में स्थित सभी सेवा बस्तियों से 10वीं और 12वीं के छात्रों को चुना और उन्हें कार्यक्रम में सम्मान के लिए आमंत्रित किया, जिन्होंने 2021-2022 सत्र में अच्छे अंक प्राप्त किये। ये सभी ऐसे विद्यार्थी थे जिन्होंने विपरीत परिस्थितियों में भी अपने मनोबल को कम नहीं होने दिया तथा पूरी लगन और पूरी मेहनत के साथ अपनी पढ़ाई पर ध्यान दिया तथा अच्छे अंकों से परीक्षा को उत्तीर्ण किया।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, दिल्ली प्रांत के माननीय प्रांत सह कार्यवाह श्री विनय जी और विशिष्ठ अतिथि ब्रिगेडियर विनोद दत्ता जी तथा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, दिल्ली प्रांत के प्रांत सेवा प्रमुख श्री मिथलेश जी की भी गरिमामयी उपस्थिति रही, जिनको तुलसी का पौधा देकर सम्मान किया गया। श्री अनंगपाल जी विभाग अध्यक्ष, श्री सुशील मिश्रा, समन्वयक, उत्तरी क्षेत्र, यूथ फार सेवा ने स्कूल बैग तथा सेवा भारती ने पदक और प्रशंसा प्रमाण पत्र देकर छात्रों को सम्मानित किया।

इस कार्यक्रम के साथ हमने दिल्ली में मोजूदा विभिन्न बसितयों और वंचित क्षेत्रों तक पहुंच बनाई। प्रातिभाशाली छात्रों का समर्थन करते हुए, हम दिल्ली में अधिक संख्या में बच्चों की मदद करकने की योजना बना रहे हैं। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह प्रांत कार्यवाह श्री विनय जी ने कहा कि आज हमारे मुख्य अतिथि ये सभी मेधावी विद्यार्थी हैं, जो कि विपरित परिस्थितियों में भी आगे बढ़कर हम सभी के लिए एक प्रेरणा का स्रोत है। वही ब्रिगेडियर विनोद दत्ता जी जो कि वर्तमान में कैरियर नेविबेटर के सीईओ हैं, ने कहा यूथ फार सेवा और सेवा भारती ये वो संस्थाएं है जो हर उस व्यक्ति तक हर उस बच्चे तक हर उस समुदाय तक पहुंच रहे हैं जिनके अंदर प्रतिभा है। दत्ता जी कहते हैं कि अभी पूरे विश्व में भारत का परचम लहरा रहा है और ऐसा कहना गलत नहीं होगा कि भारत जल्दी ही विश्व गुरू बनने की कगार पे है। यूथ फार सेवा के द्वारा इस कार्यक्रम में विद्यार्थियों के लिये कैरियर काउंसलिंग का भी प्रबंध था।

सेवा भारती, यूथ फार सेवा ये ऐसी दो संस्थाये हैं जो विभिन्न क्षेत्रों तक जाकर वहां के लोगों की समस्याओं को हल करना अथवा उन्हें बेहतर सुविधा प्रदान कराती है, फिर चाहे वह शिक्षा के क्षेत्र में हो स्वास्थ्य के क्षेत्र में हो पर्यावरण के क्षेत्र में हो या आजीविका के क्षेत्र में और ये संकल्प करती है कि समाज के कल्याण के लिए सदैव तत्पर रहेगी। इसी प्रकार से टीन्स फार सेवा का कार्य भी अब दिल्ली प्रांत में विद्यार्थियों में अपनी पहचान स्थापित कर रहा है जो कि इस सम्मान कार्यक्रम में भी इसका असर दिखाई दिया। ❐

प्रकल्प दर्शन - मातृछाया

यूनिट-1, पहाड़गंज मोतियाखान, दिल्ली में लगातार समाज के तिरस्कृत बच्चों को, जिन्हें ज्यादातरे पैदा होते ही कचड़े, नाले, सुनसान इलाकों, मन्दिर की सीढ़ियों या अस्पताल के बिस्तरों पर छोड़ माता या परिवार चला जाता है, उन्हें 'मातृछाया' आश्रय देकर पालती -पोस्ती है। एक दिन से 6 वर्ष तक के बच्चों को मातृछाया जो कि भारत सरकार द्वारा पारित Juvenil JusticeAct, 2015 और Doption Regulation, 2017 के अन्तर्गत एक विशिष्ट दत्तक संस्थान (SpecializedAdoptionAgency) है में पालित-पोषित किया जाता है। इच्छुक परिवार या एकाकी व्यक्ति, जिसके परिवार में सन्तान नहीं है वह संस्थान से भारत सरकार के नियमों और विधि अनुसर इच्छित बच्चा गोद ले सकता हैं।

मातृछाया 1986 से प्रारम्भ हुआ और तभी से इस कार्य को पूरे मनोयोग से समाज हित में सेवा भारती के अन्तर्गत कर रहा है। कुल 637 बच्चे संस्थान को मिले हैं। जिनमें से 154 बच्चों को जो किन्हीं वजहों से अपने परिवार से बिछुड़ गए थे, पुनः बच्चों के परिवारों को खोजकर पहुंचाने का कार्य किया। कुल 339 बच्चों को नि:संतान परिवारों को कोर्ट के माध्यम से दत्तक में दिए गए। इस प्रकार उन परिवारों को पूर्ण होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। 12 बच्चे संस्थान में गोद देने

की प्रक्रिया मं चल रहे हैं। बाकी बच्चे या तो दूसरे संस्थानों में Transfer किए गए या जिनकी खराब स्थिति में प्राप्ति की वजह से संरक्षित नहीं किया जा सका।

ज्यादातर बच्चिां ही संस्थान में आती हैं ये बच्चियां समाज में पुनः स्थापित होकर दो-दो परिवारों कमो पुष्पित-पल्लवित करती है। एक बच्ची जिसे 25 वर्ष पूर्व चंडीगढ़ के परिवार को गोद दिया गया था, उसकी शादी सेना के मेजर से हुई है। ऐसे ही कई बच्चे समाज के उच्च शिखर पर विराजित हो कर अपना और अपने परिवार का नाम रोशन कर रहे हें।

गोद देने की प्रक्रिया में किसी भी प्रकार का जाति-धर्म-आर्थिक स्थिति या सामाजिक स्थिति4 की वजह से भेदभाव नहीं किया जाता। हाल के दिनों में बच्चें सैनिकों, प्राइवेट नौकरी पेशा, ड्राईवर, समाज के शोषित -वंचित वर्ग के परिवारों के साथ ही उच्च वर्ग के परिवारों को भी दिए गए। जिसमें सीए, आईआईटी प्रोफेसर भी शमिल है।

यूनिट-2 मियांवाली नगर

इसकी शुरूआत 2002 में हुई। 2021 तक इस केन्द्र पर कुल 448 बच्चे आए। 348 बच्चे गोद दिए गए। इनमें से 5 बच्चे अमरीका गए, 47 बच्चे .... हुए। 20 बच्चे ट्रासफर हुए, 41 बच्चे अन्य ....

दोनों मातृछायाओं में :-

बच्चे आए 637+448=1185 बच्चे

गोद गए 339+348=687 बच्चे

परिवारों को वापसी 157+47=201 बच्चे

अन्य केन्द्रों में दिये 71+20=91 बच्चे

यह कार्य समाज हेतु समाज के सहयोग से जारी है। आवश्यकता बहुत है, देखना है और कितने आयाम मातृछाया जोड़ती है। ❐

पूर्वी विभाग में विभिन्न कार्यक्रम

■ **भारती बंसल**

प्रान्त चित्रकला प्रतियोगिता – इसमें पूर्वी विभाग के सभी जिलों के चयनित 10 विद्यार्थियों ने भाग लिया। अनेक नए अनुभव हुए। प्राकृतिक वातावरण में पेड़–पौधों अनेक प्रकार के फूलों के बीच विद्यार्थियों और कार्यकर्ताओं ने अविस्मरणीय यादों के साथ गुमनाम स्वतन्त्रता सेनानियों को याद किया। उनके सुन्दर चित्र (रंगीन) बनवाकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किये। पूरी दिल्ली प्रान्त में से विद्यार्थियों के प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार और भाग लेने वाले सभी बच्चों को सर्टीफिकेट दिए गए।

स्वतन्त्रता संग्राम के गुमनाम नायकों की श्रृंखला में विभाग के माध्यम से एक पीडीएफ बनाया गया। जो जिलों को भेजा गया और जिलों के माध्यम से प्रतिभागियों तक प्रतियोगिता से पूर्व भेजा गया ताकि वे पहले अभ्यास कर सकें।

• **गणेश चतुर्थी** – गणेश चतुर्थी 31 अगस्त से आरम्भ होकर 9 सितम्बर तक का उत्सव है। सभी अपनी सुविधानुसार गणपति की स्थापना करते उनकी पूजा अर्चना और भोग लगाते है। जिलों के अनेक केन्द्रों पर इनका आयोजन किया गया। बस्ती के महिलाओं ने भजन कीर्तन कर उत्सव मनाया। शाहदरा जिले के कड़कड़डूमा स्थित मनोरंजन केन्द्र पर किशोरी विकास की कक्षा लगी और छात्राओं को गणेश चतुर्थी के विषय में बताया गया। फैशन डिजाइनिंग के प्रकल्प में श्रीमती मीनाक्षी ने विद्यार्थियों से प्रश्न पूछकर जानकारी ली।

• **शिक्षक दिवस (5 सितम्बर)**– सेवा भारती पूर्वी विभाग ' शिक्षक दिवस' पर भव्य आयोजन हुआ। विद्यार्थियों ने शिक्षक का अभिनय कर अपने शिक्षकों के प्रति आभार और सम्मान प्रकट किया। छोटे बच्चों द्वारा अपने शिक्षक के प्रति अपने अनुभव व्यक्त किए। सभी शिक्षकों को उपहार भी दिए गए।

• इन्द्रप्रस्थ जिले के 'महर्षि वाल्मीकि केन्द्र' 17 ब्लॉक कल्याणपुरी पर फिर से नए कम्प्यूटर केन्द्र का उदघाटन किया गया। श्री देवशरण जी के कर कमलों द्वारा उदघाटन किया गया। दो नए विद्यार्थियों द्वारा कम्प्यूटर कक्षा की शुरूआत की गई। नई शिक्षिका को भी सम्मानित किया गया। अन्त में प्रसाद वितरण किया गया।

• गाँधी नगर जिला द्वारा सुपोषित भारत अभियान के अंतर्गत दिनांक 10 सितंबर 2022 दिन शविार को मेडिकल कैम्प का आयोजन किया गया जिसमें एनएमओ के डाक्टरों द्वारा बस्ती की बहनों एवं बच्चों का चैकअप किया गया जिसमें प्रान्त से कुन्दन जी जिले से जिला अध्यक्षा रूचि अग्रवाल जी, मंत्री पवन कुमार जी, बहन समिति मंत्री निर्मल जैन जी, शिक्षिका, निरीक्षिका उपस्थित रहे। स्थान श्री लक्ष्मी नारायण मन्दिर, धर्मशाला, महिलाओं की की संख्या–17, बच्चों की संख्या –19

• **सुपोषित भारत अभियानः** सुपोषित भारत अभियान के अन्तर्गत पूर्वी विभाग के सभी जिलों में 'मेडिकल कैम्प' आयोजित किए गए। एनएमओ के अखिल भारतीय विद्यार्थी कार्य प्रमुख डॉ0 गौतम जी एवं उनकी टीम ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। इस कैम्प में सिर्फ गर्भवती एवं दुग्धपान कराने वाली मातृशक्तियों के स्वास्थ्य की जाँच की गई। बस्ती के करीब 100 परिवारों में प्रवास करके इन लोगों के नाम रजिस्टर

किए गए। फिर कैम्प लगाकर इन्हीं महिलाओं एवं 6 माह से 5 साल तक के बच्चों का निरीक्षण किया गया। मेडिकल कैम्प को पूरा समय देकर सुनयोजित तरीके से सम्भालने में प्रान्त, विभाग और जिले के अनुभवी कार्यकर्ताओं –बन्धुओं और भगिनियों ने सफल प्रयास किया। अभियान का मुख्य उदेश्य – बस्ती के हर घर के बच्चों और महिलाओं को पोषित करना है। उनके स्वास्थ्य में किसी तत्व की कमी कोई कमी न रह पाए। जब देश का भविष्य स्वस्थ और पोषित होगा, तभी देश वास्तव में नए कीर्तिमान गढ़ पाएगा।

• विज्ञान विहार (पूर्वी दिल्ली) में वहाँ की रेज़िडेंट्स वेलफ़ेयर एसोसिएशन, श्री रघुनाथ मंदिर धर्म संस्थान (विज्ञान विहार) और महिला मंडल (सेवा भारती) ने मिलकर "मेहंदी उत्सव" मनाया। मेहँदी लगाने के लिए सेवा भारती की अध्यापिकाओं द्वारा प्रशिक्षित की गयी (उत्तीर्ण हुई) बच्चियों को अपने यहाँ बुलाकर उनको अपना हुनर दिखाने का अवसर प्रदान किया।

बच्चियों ने भी बहुत ही मेहनत से अति सुंदर मेहँदी लगाई। इसी सुंदर आयोजन की कुछ झलकियाँ भी संलग्न हैं।

विशेष : महिला मंडल सभी से आशा और अपेक्षा करती है कि इन होनहार बच्चों को अपना हुनर दिखाने के इसी प्रकार के और अधिक मौक़े दिए जाएँ। ❐

दीपावली उत्सव (पूर्वी विभाग)

विभाग के सभी जिलों में 21-22 अक्टूबर 2022 के दिन दीवाली उत्सव धूमधाम से मनाया गया। उत्सव के साथ इसे शिक्षिका, निरीक्षिका सम्मान का स्वरूप दिया गया हर वर्ष की तरह। दीपावली क्यों मनाते हैं, इसके महत्व को कथाओं और उद्बोधन के माध्यम से सेवित जनों को समझाया गया। सामूहिक विवाह के जोड़ों को आमंत्रित कर उनके अनुभव सुने। भजन मण्डली की बहनों को भी आमंत्रित किया गया। गणेश वंदना और दीप प्रज्जवलन के द्वारा कार्यक्रम प्रारम्भ किये गए। सेवा गीत गाए। श्रीराम पर चर्चा की गई। शाहदरा जिले में कार्यक्रम मारवाड़ी युवा मंच की बहनों ने उपस्थित होकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। विश्व हिन्दू परिषद के श्री विजय कांत जी ने अपने उद्बोधन द्वारा कार्यक्रम की गरिमा बढ़ाई। श्री सुमन जी ने दिए की कहानी सुनाई कि वह किस प्रकार स्वयं प्रकाशित होकर जगत में उजियारा भर देता है। सभी को राह दिखाता है। शिक्षिका, निरीक्षिका, बस्ती सेवको, भजन मण्डली की बहनों और सामूहिक विवाह के जोड़ों को साड़ी बिछुए, पेन्ट शर्ट और मिठाई देकर सम्मानित किया गया। विभाग और जिले के सभी कार्यकर्ता बन्धुओं और भगिनियों ने कार्यक्रम सफल बनाने में कठिन परिश्रम और अपना समय दिया अन्त में शान्ति पाठ के पश्चात कार्यक्रम समाप्त कर जलपान और भोजन की भी व्यवस्था रही।

विशेष: सेवितजनों के द्वारा गांधी नगर में बहुत ही सुन्दर तरीके से हनुमान चालीसा का पाठ किया और अन्य कार्यक्रम भी रहे।

– भारती बंसल

मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम

तिलक जिला मादीपुर केंद्र में 1:30 बजे किशोरी विकास के महत्वपूर्ण पहलू के अंतर्गत "मानसिक स्वास्थ्य" विषय पर श्रीमती इंदिरा शर्मा जी ने वक्तव्य दिया। डॉक्टर स्मिता यादव जी ने विषय की भूमिका रखी और विषय को परस्पर संवादात्मक बनाया। सरला जी की भी उपस्थिति रही और उनका मार्गदर्शन रहा। केंद्र की सभी शिक्षिकाएं और 35 लड़कियों की उपस्थित रही जो बहुत सरहनीय थी। माननीय इंदिरा जी ने मानसिक स्वास्थ्य से जुड़े हर पहलू पर विस्तार से चर्चा की। लड़कियों ने अपनी समस्याएं साझा की। मानसिक परेशानियों से जुड़ी सभी समस्याओं का निदान इंदिरा जी द्वारा किया गया। वक्तव्य इतना प्रभावी था कि सभी ने यह इच्छा जाहिर की कि हर थोड़े दिनों के अंतराल में इस तरह के महत्वपूर्ण विषय पर ज्यादा से ज्यादा संगोष्ठी आयोजित होनी चाहिए। अंत में जलपान की व्यवस्था भी की गई।

शिक्षक दिवस

केशव पुरम विभाग में सरस्वती विहार जिला में दिनांक 4.9.2022 (रविवार) को शिक्षक दिवस का कार्यक्रम राम मंदिर आनन्द वास (शकूर पुर) में बहुत ही धूम-धाम से मनाया गया। प्रांत से संगठन मंत्री श्री शुकदेव जी का मार्गदर्शन मिला। शिक्षक का हमारे जीवन में क्या महत्व है इसकी जानकारी दी गई और शिक्षकों (गुरूओं) का सम्मान करना बहुत सौभाग्य की बात होती हे। क्योंकि गुरू ही हमें अंधकार से प्रकाश की ओर अग्रसर करते है। (लायंस क्लब) की तरफ से शिक्षिकाओं को उपहार दिया गया। अन्त में मन्दिर में चल रहे भंडारे (प्रसाद) के रूप में जलपान की व्यवस्था रही कुल उपस्थिति लगभग 60 के करीब थी। कार्यक्रम सफलता पूर्वक संपन्न हुआ। ❐

यमुना विहार विभाग में विभिन्न कार्यक्रम

• **नवरात्री उत्सव :** दिनांक 3-10-2022 दुर्गाष्टमी के अवसर पर प्रताप नगर सेवा बस्ती का नवरात्री उत्सव श्री महीपाल जी की अध्यक्षता में उनकी धर्मशाला में बहुत ही हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। जिसमें 72 बाल कलाकारों, समाज के भाई-बहनों का पूर्ण सहयोग मिला। कार्यक्रम की तैयारी सेवा भारती की कार्यकर्ता ललिता सिंह जी व भारती सिंह जी के मार्गदर्शन में की गई। माँ दुर्गा की आरती गणेश वंदन सरस्वती वंदन मां दुर्गा का महिषासुर के साथ युद्ध का मंचन किया गया।

प्रांत द्वारा चित्रकला प्रतियोगिता में भाग लेने वाले छात्र-छात्राओं को प्रांत से प्राप्त प्रशस्तिपत्र बस्ती के बहन व भाईयों द्वारा वितरित किये गये। अंत में विभाग मंत्री द्वारा सेवा भारती के द्वारा चलने वाले कार्यों की जानकारी दी गई। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रीय गान के साथ हुआ।

• दिनांक 29.9.2022 को सेवा भारती माता जीवनी बाई केन्द्र (जिला ब्रह्मपुरी) में नवरात्र के पावन पर्व के उपलक्ष्य में माँ भगवती के गुणगान का भव्य आयोजन किया गया।

सर्वप्रथम सेवा भारती यमुना विहार विभाग के अध्यक्ष श्री अशोक बंसल जी की अध्यक्षता में समस्त गणमान्य पदाधिकारियों व कार्यकर्ताओं ने माँ भगवती की पावन ज्योति प्रज्जवलित की तत्पश्चात मंत्रोच्चारण के साथ माँ भगवती एवं सभी देवताओं का आह्वान किया गया।

• ब्रह्मपुरी जिले के सभी कार्यकर्ताओं, निरीक्षिका, शिक्षिकाओं ने कार्यक्रम में पूर्ण सहयोग दिया। क्षेत्रीय जनमानस ने भी कार्यक्रम में बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया। माँ का गुणगान लगभग चार घंटे तक चला। इस दौरान सभी ने भक्तिसंगीत व नृत्य के माध्यम से वातावरण को भक्तिमय बनाए रखा।

यमुना विहार विभाग से हमारी कुछ बहने भी कार्यक्रम में उपस्थित रहीं। कुल मिलाकर जनमानस की संख्या लगभग 150 रही। अंत में माँ भगवती की आरती व भोग के पश्चात प्रसाद वितरण किया गया।

कार्यक्रम में प्रसाद, वाद्ययंत्रों व अन्य व्यय का प्रबंध श्री श्याम सुन्दर उपाध्याय जी ने किया। ❐

कर्मठ कार्यकर्ता श्री रघुराज सिंह जी

सुभाष पार्क निवासी श्री रघुराज सिंह निष्ठावान तथा कर्मठ कार्यकर्ता हैं। इनका जन्म अलीगढ़ जिले के दहेली गांव में 7 अक्टूबर 1943 को हुआ था। पिता जी मुख्य अध्यापक थे। अपने गांव और छर्रा कस्बे में हाई स्कूल पास करके बड़े भाई के पास दिल्ली गये। 1963 से 1969 तक डीसीएम में नौकरी की। नौकरी के साथ-साथ साहिबाबाद के लाजपत राय कॉलेज से बी. ए. की पढ़ाई पूरी की। माननीय प्रचारक श्री दिनेश जी के सहयोग से छर्रा में ही स्वयंसेवक तो बन चुके थे। 1972 में यहां सुभाष पार्क में आने के बाद तो संघ में सक्रियता निरंतर बढ़ती ही गई। संघ शिक्षा वर्ग प्रथम वर्ष 1975 में किया। 1987 में द्वितीय तथा 1994 में नागपुर से तृतीय वर्ष पूर्ण किया। अपनी कार्य क्षमता के कारण आपने जिला कार्य कार्यवाह का दायित्व कुशलता से निभाया। नवीन शाहदरा में श्रीमान गोपाल जी अरोड़ा द्वारा संचालित श्रीराम जानकी सामूहिक विवाह समिति में भी सेवा करते रहे। सन 2005 से सेवा भारती में दायित्व दिया गया। सभी कार्य कुशलता से निभाए। सेवाधाम में भी 3 वर्ष सेवा की। 2016 से आपको गोपालधाम का दायित्व मिला। वयोवृद्ध होते हुए भी आपसे सहारा बच्चों की भरपूर सेवा लगातार कर रहे हैं। ईश्वर उनकी सेवा भावना और क्षमता तनाए रखें।

– आचार्य मायाराम

BANSAL WIRE INDUSTRIES LTD.

BANSAL

Stainless Steel Wires - High/Medium Carbon Steel Wires
(Black and Galvonised)

Mfrs. : Low Carbon Steel Wires, Profile/Shaped Wires
(Black and Galvonised)

H.B. HHB & G.I. WIRES

Bansal Wire Industries Ltd.
F-3, Shastri Nagar, Delhi-110052 (India)
Tel. : +91-11-23648401, 23651890-91-92-93
Email : info@bansalwire.com, www.bansalwire.com

'डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी : एकात्म भारत के प्रणेता' पुस्तक का विमोचन

गत 24 सितंबर को नई दिल्ली स्थित अपने आवास पर केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी ने 'डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी : एकात्म भारत के प्रणेता' पुस्तक का विमोचन किया। उन्होंने कहा कि आज की पीढ़ी के लोग डॉ. मुखर्जी के बारे में कम जानते हैं। उनके व्यक्तित्व और कृतित्व को जन-जन तक पहुंचाने की आवश्यकता है। इसके लिए समय-समय पर गोष्ठी और कार्यक्रम होते रहने चाहिए। उन्होंने कहा कि डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने भारत को जोड़ने के लिए स्वयं का बलिदान दे दिया। ऐसे महापुरुषों के बारे में हर व्यक्ति को जानकारी होनी चाहिए। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि और विश्व हिंदू परिषद के कार्यकारी अध्यक्ष आलोक कुमार ने कहा कि डॉ. मुखर्जी के कारण ही आज जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 हट पाया है। पुस्तक के लेखक आचार्य मायाराम पतंग ने बताया कि 31 अक्टूबर, 1951 को नई दिल्ली के रघूमल आर्य कन्या विद्यालय में भारतीय जनसंघ का पहला अधिवेशन हुआ था। इसी में डॉ. मुखर्जी को जनसंघ का अध्यक्ष चुना गया था। प्रभात प्रकाशन द्वारा प्रकाशित इस पुस्तक में डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के अनेक अनछुए प्रसंगों को प्रस्तुत किया गया है।

महर्षि वाल्मीकि जयंती के उपलक्ष्य में झांकी

महर्षि वाल्मीकि जयंती के उपलक्ष्य में सेवा भारती पूर्वी की मयूर विहार, त्रिलोक पुरी सेवा बस्ती के बच्चों ने लव, कुश सीता मां एवं गुरूवर महर्षि वाल्मीकि के रूप में सज-धज कर झांकियो में सम्मिलित हुए। झांकी की छटा देखते ही बनती थी।

करवा चौथ व्रत

इस त्योहार पर पूर्वी विभाग में दो जिलों - गांधी नगर व मयूर विहार करवा चौथ व्रत के उलक्ष्य में डॉ. हेडगेवार भवन, कैलाश नगर में मेंहदी मेला का आयोजन किया गया।

माधव सेवा केन्द्र 32 ब्लॉक त्रिलोकपुरी, में करवा चौथ के उपलक्ष्य में मेंहदी प्रतियोगिता रखी गयी, 13 प्रतियोगियों ने भाग लिया। प्रथम, द्वितीय व तृतीय को पुरस्कार दिए। विभाग से स्नेहा जी जिला अध्यक्षा सुनम गुप्ता, उपाध्यक्षा चन्द्र मोहिनी जी उपस्थित रही।

रजिस्टर्ड क्रमांक 40605/1983
तिथि 6-7 नवम्बर, 2022, प्रकाशन तिथि-5 नवम्बर, 2022
Posted at - LPC, DELHI RMS, DELHI-110006

डाक रजिस्टर्ड नं. U(C)-166/2022-24
DL(ND)-11/6188/2022-23-24
अग्रिम शुल्क के बिना प्रेषण

यमुना विहार विभाग के बाल कलाकारों द्वारा रामलीला मंचन

यमुना विहार विभाग में बाल कलाकारों द्वारा तीन घंटे में संपूर्ण रामलीला का बहुत ही सुन्दर प्रस्तुतीकरण किया गया। यह कार्यक्रम बहुत ही अच्छा रहा। श्रोतागण बच्चों के द्वारा प्रस्तुत रामलीला को देखकर बहुत ही खुश थे। सभी सहयोगियों एवं बाल कलाकारों को बहुत-बहुत बधाई।

टीन्स 4 सेवा

आज मैं 2 वर्ष की हो गई हूं। सभी बड़ों के स्नेह एवं आशीर्वाद से मेरा लालन-पालन हुआ। 2020 के कोरोना काल में मेरा जन्म हुआ, फिर भी सभी बाधाओं को पार करती, मैं गिरी, संभली, किसी ना किसी ने मेरा हाथ पकड़ा और मुझे सहारा दिया। मैं उन सभी का आज शिक्षक दिवस पर हृदय से आभार प्रकट करती हूं और आशा करती हूं कि ऐसा प्यार आगे भी बना रहेगा। जिस ध्येय से मेरा जन्म हुआ था, उसे और कड़ी मेहनत से अपने किशोर भाईयों और बहनों को समाज सेवा में लगा देश का उत्थान करूँगी।

मंदिर भ्रमण एवं कन्यापूजन

देवी नवरात्र महोत्सव के उपलक्ष्य में पूर्वी विभाग के सभी जिलों से दो या तीन बसें शिक्षिकाओं व निरीक्षिकाओं को घुमाने हेतु गई। जिले की कार्यकर्ता बहनों और बन्धुओं का इसमें पूर्ण सहयोग रहा। अन्त में मन्दिर में प्रसाद की व्यवस्था भी रही।

पेंटिंग की कहानी

सेवा भारती यमुना विहार विभाग जिला नन्द नगरी सेवा बस्ती प्रताप नगर की छठी कक्षा की छात्रा रिया की पेंटिंग 7 अक्टूबर 2022 सेवा भारती सम्मान समारोह के माध्यम से उत्तराखण्ड के राज्यपाल महामहिम लेफ्टिनेट जनरल गुरमीत सिंह को पूर्व जनरल एवं केन्द्रीय मंत्री श्री वी. के. सिंह, माननीय प्रांत संघचालक कुलभूषण आहुजा ज, प्रांत सेवा भारती अध्यक्ष श्री रमेश अग्रवाल जी, संत प्रद्युम्न जी एवं अखिल भारतीय सेवा प्रमुख श्री पराग अभ्यंकर जी द्वारा प्रदान की गयी। इसका श्रेय प्रान्त सेवा भारती के कार्यकर्ताओं द्वारा पेंटिंग में प्रशिक्षण देने से हो सका है।

मुद्रक/संपादक/प्रकाशक: इन्दिरा मोहन द्वारा सेवा प्रकाशन न्यास के लिए 13, भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित तथा शक्ति प्रिन्टर्स 1/3001, गली न.-16, रामनगर, मंडोली रोड, शाहदरा, दिल्ली-32, से मुद्रित।